WWW.Kanchanujala.in

हिन्दी दैनिक

kanchanujala14@gmail.com

कंचन उजाला

लखनऊ से प्रकाशित

सच्चाई के साथ

कंगना रनौत पर भड़के सुशांत के वकील विकास सिंह

वर्षः 01 अंक : 244 | लखनऊ, सोमवार, 24 अगस्त, 2020 | पृष्ठ- 6 | मूल्य - 1 रुपये

बेहतर इलाज के लिए डीएम और सीएमओ रोज 2 बैठक करें:योगी

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज कहा कि कोविड प्रभावित लोगों को सुचारु तथा और बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सभी जिलाधिकारी तथा मुख्य चिकित्सा अधिकारी दिन में दो बार बैठक करें। सुबह की बैठक अस्पताल में हो, जबकि शाम की बैठक इंटीग्रेटेड कमाण्ड एण्ड कंट्रोल सेण्टर में की जाए। बैठक में सामने आने वाली समस्याओं का तत्काल समाधान सुनिश्चित कराया जाए। मुख्यमंत्री यहां अपने सरकारी आवास पर बैठक में अनलॉक व्यवस्था की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सभी कोविड चिकित्सालयों में तैनात चिकित्सक एवं स्टाफ नर्स वॉर्ड में जाकर मरीजों का उपचार करें। मुख्यमंत्री ने प्रतिदिन एक लाख 30 हजार कोविड टेस्ट करने पर संतोष व्यक्त किया और कहा कि प्रदेश में टेस्टिंग तथा कोविड अस्पतालों में बेड्स की संख्या बढ़ाने के लिये अग्रिम रणनीति तैयार रहे। उन्होंने लखनऊ, प्रयागराज, कानपुर नगर, गोरखपुर आदि जिलों में संक्रमितों की संख्या को देखते हुए विशेष ध्यान देने के निर्देश दिया और कहा कि इन जिलों में संक्रमित लोगों की जीवन रक्षा के लिए विशेष प्रयास किए जाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड-19 के संक्रमण को देखते हुए सार्वजनिक स्थलों पर कोई भी धार्मिक या सांस्कृतिक आयोजन न किया जाए। कोविड-19 के प्रोटोकॉल का पालन हर हाल में सुनिश्चित कराया जाए। किसी भी स्थान पर पांच से अधिक लोग एकत्र न हों। कहीं भीड़ न इकट्ठा होने पाए। उन्होंने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्य प्रभावी ढंग से संचालित करने के निर्देश दिये ।बाढ़ पीड़ित को राशन किट का वितरण कराया जाए। उन्होंने पूरे प्रदेश में शनिवार और रविवार को स्वच्छता और सेनिटाइजेशन कार्यों को निरन्तर व प्रभावी ढंग से कराए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वच्छता समितियों को बहाल करने के निर्देश भी दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी ग्राम पंचायतों में पंचायत भवन एवं सामुदायिक शौचालय बनाए जाने हैं। इस सम्बन्ध में सांसद एवं विधायकों के साथ प्रभावी कार्ययोजना बनाई जाए। पंचायत भवन में मिनी सचिवालय और सार्वजनिक कार्यक्रमों स्थान की व्यवस्था की जानी चाहिए। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत संचालित होने वाले कार्यक्रमों के सम्बन्ध में मुख्यमंत्री ने कहा कि इन्हें त्वरित और प्रभावी ढंग से संचालित कराया जाए। उन्होंने कहा कि अन्य राज्यों में मौजूद उत्तर प्रदेश के भवनों में ओडीओपी के उत्पादों को प्रदर्शित किया जाए। अयोध्या में बनने वाले राज्यों के अतिथि गृह में भी ओडीओपी के उत्पादों को प्रदर्शित करने की व्यवस्था की जाए। इस अवसर पर चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश खन्ना, स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह, मुख्य सचिव आर0के0 तिवारी, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त आलोक टण्डन, अपर मुख्य सचिव वित्त संजीव मित्तल, अपर मुख्य सचिव गृह एवं सूचना श्री अवनीश कुमार अवस्थी, प्रमुख सचिव स्वास्थ्य आलोक कुमार, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री संजय प्रसाद, प्रमुख सचिव पशुपालन भुवनेश कुमार, सचिव मुख्यमंत्री आलोक कुमार, राहत आयुक्त संजय गोयल सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

> मुख्यमंत्री ने प्रतिदिन एक लाख 30 हजार कोविड टेस्ट करने पर संतोष व्यक्त किया

कोरोना मामले 25 दिन में दो गुने, रिकवरी दर भी बढ़ी

नयी दिल्ली, एजेंसी। देश में कोरोना का कहर पूरे वेग पर है और पिछले 25 दिन के दौरान इस वायरस से संक्रमितों का आंकड़ा 15 लाख से बढ़कर दुगना तीस लाख से अधिक हो गया। इस दौरान राहत की बात यह रही कि मृतकों की संख्या इसके अनुपात में नहीं बढ़ी और मृत्यु दर कम होने के साथ ही मरीजों के स्वस्थ होने की रिकवरी दर में उल्लेखनीय सुधार आया। स्वास्थ्य मंत्रालय के 29 जुलाई के आंकड़ों के मुताबिक देश में 15 लाख 31 हजार 669 लोग कोरोना से संक्रमित और 34,193 लोगों की मौत हुई थी।

नौ लाख 88 हजार 29 संक्रमित ठीक भी हुए थे और पांच लाख 9 हजार मामले अर्थात 33.26 प्रतिशत सक्रिय मामले और रिकवरी दर 64.50 प्रतिशत थी। मृत्यु दर 2.23 प्रतिशत थी। रविवार को जारी आंकड़े में भारत 30 लाख से अधिक संक्रमितों वाला तीसरा देश है। पहले पर अमेरिका और दूसरे स्थान पर ब्राजील है। अमेरिका में अब तक सर्वाधिक 56,67,112 लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हो चुके हैं तथा 1,76,353 लोगों की मौत हो चुकी है। ब्राजील में अब तक 35,82,362 लाख लोग इसकी चपेट में आ चुके हैं जबकि 1,14,250 लोगों की मौत हो चुकी है। आज सुबह जारी आंकड़ों में संक्रमण के 69,239 नये मामलों के साथ संक्रमितों का कुल आंकड़ा 30,44,940 हो गया। इसी दौरान 57989 मरीज स्वस्थ हुए हैं जिससे कोरोना से मुक्ति पाने वालों की संख्या 22,80,566 हो गयी है। इसके साथ ही मरीजों के स्वस्थ होने की दर बढ़कर 74.89 फीसदी पहुंच गयी है। कुल संक्रमितों की संख्या 7,07,668 हो गयी है। देश में सक्रिय मामले 23.43 प्रतिशत हैं जबकि मृतकों की दर 1.87 प्रतिशत है।

बिहार में नीतीश के नेतृत्व में सभी सहयोगी दल लड़ेंगे चुनाव: नड्डा

नयी दिल्ली, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने रविवार को एलान किया कि बिहार विधानसभा चुनाव सभी सहयोगी दल मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अगुवाई में लड़ेंगे और विजयी होंगे। श्री नड्डा ने आज बिहार पार्टी की प्रदेश कार्यसमिति की वर्चुअल बैठक को संबोधित करते हुए कहा भाजपा, जनता दल (यूनाइडेट) और लोक जनशक्ति पार्टी (लोजप) नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ा जायेगा और इसमें विजयी होंगे। गौरतलब है कि बिहार में अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा चुनाव होना है। भाजपा अध्यक्ष ने कहा बिहार ही नहीं देश मे अन्य राज्यों में विपक्ष अब बीते वक्त की बात हो गई है। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से नीतिश कुमार की अगुवाई में बिहार चुनाव में विजय हासिल करने के लिए जुट जाने का आह्वान करते हुए कहा कि भाजपा केवल अपने समृद्ध करने में नहीं जुटी रहती वह चाहती है कि उसके गठबंधन सहयोगी भी मजबूत हों। श्री कुमार के राज्य में कोरोना वायरस को नियंत्रण करने के प्रयासों का जिक्र करते हुए श्री नड्डा ने कहा बिहार का रिकवरी रेट आज 73.48 प्रतिशत है। बिहार में घर-घर जाकर दस करोड़ स्क्रिनिंग की गई है। राज्य में कोरोना जांच 35 हजार से बढ़कर आज एक लाख पर पहुंच गई है। इसके लिए बिहार सरकार बधाई की पात्र है। उन्होंने कहा इस बात की खुशी है कि बिहार ने कोविड संकट, चाहे बिजली गिरने से लोगों के हताहत होने का संकट हो और बाढ़ राहत के कार्यों में बहुत अच्छा कार्य किया है। श्री नड्डा ने कहा बिहार ने राजनीतिक और सामाजिक चेतना को बहुत ही ऊपर रखा है। चंपारण सत्याग्रह हो या नव निर्माण आंदोलन अथवा जय प्रकाश जी को हम याद करें, तो हमें पता लगता है जब सभी ने समझौता कर लिया था, तब बिहार ने नेतृत्व दिया है।

कोविड: वंदे भारत ट्रेन का डिजाइन बदलेगा

नयी दिल्ली, एजेंसी। कोविड 19 महामारी के मद्देनज़र वंदे भारत एक्सप्रेस यानी ट्रेन 18 के कोच के अंदर के डिजाइन में बदलाव किया जायेगा। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष विनोद कुमार यादव ने आज एक वर्चुअल संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 44 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों की निविदा पिछले सप्ताह रद्द कर दी गई थी। कुछ कंपनियों द्वारा तकनीक निविदा में वित्तीय जानकारी लीक करने के कारण निविदा रद्द की गई। इन सेमी हाई स्पीड ट्रेनों के लिए नयी निविदा इसी सप्ताह जारी की जायेगी। इसमें कोच के अंदर की डिजाइन में कोविड 19 को ध्यान में रखते हुए बदलाव किये जायेंगे। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि पिछले साल दिसंबर में जब निविदा जारी की गई थी उस समय कोविड की परिस्थिति नहीं थी।

लद्दाख में पीछे हटने को चीन ने रखी डिमांड, भारत ने दिखाया ठेंगा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत-चीन के बीच पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर लंबे समय से तनातनी चल रही है। जून महीने में गलवान घाटी में हुई हिंसक झड़प के बाद, तनाव कम करने को लेकर दोनों पक्षों में कई बार बातचीत हो चुकी है, लेकिन कुछ मुद्दों पर विवाद सुलझ नहीं सका है। अब भारत ने चीन के उस सुझाव को सिरे से खारिज करते हुए ठेंगा दिखा दिया है, जिसमें वह चालबाजी दिखाने की कोशिश कर रहा था। दरअसल, लद्दाख के फिंगर एरिया से पीछे हटने के लिए चीन ने भारत के सामने कुछ सुझाव रखे थे। इसके तहत, चीन ने कहा था कि हमारी सेना पीछे हट जाएगी, बशर्ते भारतीय सेना को भी पीछे हटना होगा। सूत्रों ने कहा कि चीनी पक्ष ने सुझाव देते हुए कहा कि भारत और चीन दोनों को फिंगर-4 इलाके से पीछे जाना होगा। इसका जवाब देते हुए भारतीय पक्ष ने दो टूक मना कर दिया। दोनों पक्षों के बीच कूटनीतिक स्तर की वार्ता होने के बाद, दोनों देश और सैन्य स्तर की बातचीत करने के पक्ष में हैं, जिससे तीन महीने से भी ज्यादा वक्त से चले आ रहे तनाव को खत्म किया जा सके। हालांकि, लगातार बातचीत और चीन की चालबाजी की वजह से पूरी तरह हल नहीं निकलता देख शीर्ष सैन्य कमांडरों ने फील्ड कमांडरों से सीमा पर लंबे वक्त के लिए डटे रहने के लिए पूरी तरह तैयार रहने को कहा है।

आईएसआईएस आतंकी अबु यूसुफके घर से मिले मानव बम जैकेट

बलरामपुर, एजेंसी। दिल्ली में पुलिस के मुठभेर के बाद गिरफ्तार आईएसआईएस के आतंकवादी अबु युसूफको लेकर यूपी एटीएस की टीम शनिवार देर शाम उत्तर प्रदेश के बलरामपुर पहुंची। आतंकी युसूफ बलरामपुर का ही निवासी है। पुलिस ने गांव पहुंचकर छापेमारी की और परिजनों समेत अन्य लोगों से पूछताछ की। जिस दौरान अबु युसूफके घर से कई विस्फोटक सामान और विवादित झंडे जब्त किए गए हैं।पुलिस आतंकी यूसुफको लेकर उसके गांव पहुंची। जिसके बाद गांव के बार्डर को सील कर दिया गया। पुलिस ने तालाशी लेनी शुरू की जिस दौरान पुलिस को मानव बम जैकेट, बारूद सहित कई अन्य विस्फोटक सामग्री व विवादित झंडे मिले। बताया जा रहा है कि पुलिस ने अबु युसूफके घर से जिस झंडे को बरामद किया है वो आईएसआईएस का है।

मुजफ्फरनगर में कोविड-19 के तीन मरीज लापता

मुजफ्फरनगर, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में कोविडष्-19 से संक्रमित पाए गए तीन मरीजों का पता नहीं लगाया जा सका है, क्योंकि उन्होंने नमूना संग्रह के दौरान अपने बारे में फर्जी जानकारी और गलत फोन नंबर दिए थे। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि उनमें से दो ने यहां एक अस्पताल के कर्मचारी होने का दावा किया था जबकि तीसरे व्यक्ति ने गलत पता दिया था। अधिकारियों ने कहा कि स्वास्थ्यकर्मियों की टीम शुक्रवार को साकेत कॉलोनी गयी थी और दो अन्य संक्रमितों को इलाज के लिए लाने के मकसद से शनिवार को उनके बताये गये अस्पताल में गयी थीं। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ प्रवीण चोपडा ने कहा कि उन्होंने फर्जी जानकारी प्रदान की थी। अधिकारियों ने कहा कि स्वास्थ्यकर्मी होने का दावा करने वालो दोनों व्यक्तियों में शनिवार को कोरोनो वायरस संक्रमण की पुष्टि हुई थी।

केजरीवाल की केंद्र से अपील, ट्रायल बेसिस पर शुरू हो दिल्ली मेट्रो

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के व्यापारी और व्यापार संगठन से जुड़े लोगों से रविवार शाम को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए चर्चा की। उन्होंने कहा कि पब्लिक ट्रांसपोर्ट को लेकर लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। मुझे भी इस बात की जानकारी है। मैंने केंद्र सरकार से दिल्ली मेट्रो चलाने की अपील की है। मैंने इस मुद्दे को कई बार केंद्र सरकार के सामने उठाया है। केजरीवाल ने कहा कि मैंने केंद्र सरकार से फेज्ड मैनर और ट्रायल बेसिस पर मेट्रो चलाने की बात कही है। केजरीवाल ने कहा कि केंद्र सरकार मैंने अपील की है कि आप दिल्ली को देश से अलग रखिए, क्योंकि यहां पर कोरोना नियंत्रण में है। भले ही आप देश के अन्य हिस्सों में मेट्रो मत चालओ लेकिन दिल्ली में इसकी इजाजत दी जाए। हम मेट्रो चलाना चाहते हैं। दिल्ली सीएम ने कहा कि मुझे उम्मीद है कि केंद्र सरकार से इसके लिए अनुमति जल्द ही मिलेगी। सीएम ने कहा कि 100 साल बाद ऐसी महामारी आई है। पिछले कुछ महीने हमारे लिए कठिनाइयों से भरे रहे हैं। मुझे खुशी है कि दिल्ली में कोरोना नियंत्रण में है। जून के महीने में स्थिति थोड़ी चिंताजनक हो गई थी, लेकिन दिल्ली के दो करोड़ लोगों, सभी संस्थाओं और केंद्र सरकार की मदद से अब स्थिति नियंत्रण में है। व्यापारियों, धार्मिक संगठनों और सामाजिक संगठनों ने भी इस लड़ाई में काफी साथ दिया।

प्रधानमंत्री मोदी ने नुआखाई पर्व की बधाई दी, किसानों को सराहा

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को देशवासियों को किसानों के त्योहार 'नुआखाई' की बधाई व शुभकामनाएं दीं और अन्नदाताओं की सराहना करते हुए कहा कि उनके प्रयासों से ही देश का पेट भरता है। मोदी ने ट्वीट कर कहा, ''नुआखाई का यह विशेष मौका हमारे किसानों की मेहनत का पर्व है। उनके ही प्रयासों से देश का पेट भरता है। उन्होंने कहा, ''यह शुभ दिन सभी के जीवन में समृद्धि लाए और सभी को अच्छी सेहत प्रदान करे। नुआखाई जुहार।'' 'नुआखाई' देश के कई इलाकों खासकर ओडिशा में प्रमुख तौर पर मनाए जाने वाला कृषि त्योहार है। इसमें फसलों, अच्छी बारिश और खेती के लिए अनुकूल मौसम के लिए देवताओं की पूजा कर आभार व्यक्त करते हैं।

मोदी का प्रकृति प्रेम, मोर मांगे मोर

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रकृति से बहुत लगाव रखते हैं इसका अहसास वह पहले भी कई मौकों पर करा चुके हैं और इसी कड़ी में उनकी नयी बानगी दिल को भाव विभोर करती है। श्री मोदी ने रविवार को अपने इंस्टाग्राम एकाउंट पर एक मिनट 47 सेकेंड का एक वीडियो पोस्ट किया है जिसमें वह एक प्लेट में दाना लेकर बैठे हुए हैं और राष्ट्रीय पक्षी मोर उस प्लेट में बेखौफ बार-बार दाना चुग रहा है। यह वीडियो प्रधानमंत्री आवास सात लोक कल्याण मार्ग का है। यही नहीं वीडियो में श्री मोदी के ईद गिर्द मोर नाचता भी नजर आ रहा है।

श्री मोदी ने इसके साथ एक कविता भी शेयर की है..

भोर भयो, बिन शोर,
मन मोर, भयो विभोर,
रग-रग है रंगा, नीला भूरा श्याम सुहाना,
मनमोहक, मोर निराला।
रंग है, पर राग नहीं,
विराग का विश्वास यही,
न चाह, न वाह, न आह,
गूँजे घर-घर आज भी गान,
जिये तो मुरली के साथ
जाये तो मुरलीधर के ताज।
जीवात्मा ही शिवात्मा,
अंतर्मन की अनंत धारा
मन मंदिर में उजियारा सारा,
बिन वाद-विवाद, संवाद
बिन सुर-स्वर, संदेश
मोर चहकता मौन महकता।

प्रधानमंत्री के इंस्टाग्राम एकाउंट पर चार करोड़ 77 लाख फालोअर्स हैं। इस वीडियो को थोड़े ही समय में 923191 लोग देख भी चुके हैं। गौरतलब है कि श्री मोदी पिछले साल तमिलनाडु के महाबलीपुरम गए थे तो वहां सुबह पीएम ने एक समुद्र तट पर जॉगिंग के दौरान साफ-सफाई की थी। श्री मोदी ने इसका वीडियो ट्वीट किया था जिसमें समुद्र तट पर वह कूड़ा-कचरा उठाते हुए दिखाई दिये थे।

देश में पल्स पोलियो अभियान की सफलता में रोटरी का योगदान अविस्मरणीय: हर्षवर्धन

नयी दिल्ली, एजेंसी। केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ हर्षवर्धन ने कहा कि देश में पोलियो के उन्मूलन के लिए चलाये गये पल्स पोलियो अभियान में रोटरी इंटरनेशनल का योगदान अविस्मरणीय है और रोटरी ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) से पहले ही दुनिया को पोलियो मुक्त बनाने का सपना देखा था। डॉ हर्षवर्धन ने शनिवार को रोटरी इंटरनेशनल की ओरिएंटेशन वर्कशॉप को वर्चुअल रूप से संबोधित करते हुये कहा कि भारत में पोलियो उन्मूलन में रोटरी के सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि रोटरी के बहुमूल्य सहयोग को भुलाया नहीं जा सकता। रोटरी ने न केवल कार्यकर्ताओं की सेवा दी और प्रचार कार्य में सहयोग दिया बल्कि वैक्सीन संग्रहण केन्द्रों से अत्यंत कम तापमान में रखे वैक्सीन को दिल्ली में सभी पोलियो बूथ पर सुबह- सुबह समय पर पहुंचा कर एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण काम कर दिखाया। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि रोटरी के साथ जुड़ने के कुछ समय बाद ही दो अक्टूबर 1994 को उन्होंने पहला पल्स पोलियो अभियान आयोजित किया । उस वक्त डब्ल्यूएचओ और यूनीसेफ जैसे वैश्विक संगठनों ने सहयोग किया और साथ मिलकर पल्स पोलियो अभियान के रास्ते में आने वाली सभी बाधाओं को दूर किया गया जिससे अभियान पूरी तरह सफल सिद्ध हुआ।

फिल्मों-टीवी धारावाहिकों की शूटिंग को केंद्र सरकार की हरी झंडी

नयी दिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार ने अब फिल्मों और टीवी धारावाहिकों के लिए शूटिंग शुरू करने की अनुमति दे दी है। इस संबंध में सूचना प्रसारण मंत्रालय ने विशेष दिशा-निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने बताया कि अब फिल्मों और टीवी धारावाहिको की शूटिंग पर लगी पाबंदी हटा ली गई है और गृह मंत्रालय तथा स्वास्थ्य मंत्रालय के निर्देशों के तहत शूटिंग हो सकेगी। शूटिंग के दौरान कैमरे के सामने कलाकार और उनके सहयोगी मास्क नही पहनेंगे पर अन्य लोगों को मास्क पहनना अनिवार्य होगा,सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना होगा। शूटिंग के समय दर्शक उपस्थित नही रहेंगे। शूटिंग के दौरान सेनेटाइजर आदि का इस्तेमाल करना होंगे। गौरतलब है कि कोरोना वायरस (कोविड-19) के प्रसार को देखते हुए फिल्मों एवं टीवी धारावाहिकों की शूटिंग पर पाबंदी लगा दी गई थी।

कांग्रेस में होगा बदलाव

कांग्रेस अध्यक्ष पद छोड़ेंगी सोनिया

नयी दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस के अंतरिम अध्यक्ष के तौर पर सोनिया गांधी का कार्यकाल 10 अगस्त को खत्म हो गया है। अब कुछ रिपोर्ट्स में पार्टी के सूत्रों के हवाले से दावा किया जा रहा है कि सोनिया गांधी अध्यक्ष पद से हटेंगी। वो इस पद पर अब नहीं रहना चाहती हैं। कल यानी सोमवार को कांग्रेस वर्किंग कमेटी की अहम बैठक होनी है। माना जा रहा है कि इसी बैठक में नए अध्यक्ष पर फैसला संभव है। मीटिंग सुबह 11 बजे होगी। अंग्रेजी अखबार इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक कांग्रेस के 23 नेताओं ने पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी को चिट्ठी लिखकर ऊपर से नीचे तक बदलाव करने की मांग की है। चिट्ठी लिखने वालों में 5 पूर्व मुख्यमंत्री, कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य, सांसद और कई पूर्व केंद्रीय मंत्री शामिल हैं। इस बात का जिक्र है कि भाजपा लगातार आगे बढ़ रही है, पिछले चुनावों में युवाओं ने डटकर नरेंद्र मोदी को वोट दिए। कांग्रेस का बेस कम होने और युवाओं का आत्मविश्वास टूटने को लेकर गंभीर चिंता जताई गई है। बताया जा रहा है कि करीब 15 दिन पहले भेजी गई इस चिट्ठी में बदलाव का ऐसा एजेंडा दिया गया है, जिसकी बातें मौजूदा लीडरशिप को चुभ सकती हैं। इस बीच पार्टी नेता सलमान खुर्शीद ने रविवार को कहा कि आंतरिक चुनावों की बजाय सबकी सहमति देखी जानी चाहिए। राहुल गांधी को कार्यकर्ताओं का पूरा समर्थन है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि वे पार्टी अध्यक्ष हैं या नहीं। उधर, पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने भी गांधी परिवार की लीडरशिप को चुनौती देने वाले नेताओं का विरोध किया है। बताया जा रहा है कि पार्टी का एक गुट राहुल गांधी को फिर से अध्यक्ष बनाना चाहता है। पार्टी ने भी 2 दिन पहले मीडिया ब्रीफिंग में कहा था कि देशभर के कार्यकर्ता राहुल को अध्यक्ष के तौर पर देखना चाहते हैं। इस बीच छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल ने भी राहुल गांधी को पत्र लिखा है। उन्होंने पत्र में राहुल से पार्टी का अध्यक्ष पद संभालने की अपील की है।

खाद्य रसद मंत्री के जनपद में कोटेदारों ने मचा रखी है लूट

कोटेदार का खेल:करीब साढ़े तीन सौ लोगों का खा गए राशन, पी गए तेल

फतेहपुर । प्रदेश के खाद्य रसद मंत्री रणवेंद्र प्रताप उर्फ धुन्नी सिंह के गृह जनपद में इन दिनों कोटेदारों की धांधली का जवाब नहीं। मलवा ब्लाक के गांधीग्राम के मजरे रंजीतपुर के कोटेदार ने तो हद ही पार कर दी। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंचे पत्रकारों ने जब जानकारी करनी चाहिए तो सैकड़ों की तादाद में मौजूद कार्डधारकों ने आरोप लगाते हुए बताया कि कोरोना वायरस जैसी बीमारी के कारण देश में भुखमरी छाई हुई है और ऐसी अवस्था में कोटेदार ओमलता के पति रामसनेही व उसके पुत्र विकास की दबंगई का जवाब नहीं।

राशन लेने आए कार्ड धारकों ने बताया कि कोटेदार प्रतिनिधि द्वारा घर-घर जाकर लोगों से बायोमेट्रिक मशीन पर अंगूठा लगवा लिया और किसी को राशन नहीं दिया। सभी को 17 तारीख को राशन लेने के लिए बुलाया, परंतु जब 17 तारीख को कार्डधारक राशन लेने पहुंचे तो वहां पर ताला लगा हुआ था। यानी माह में मिलने वाला पूरी खेप कोटेदार द्वारा हड़प ली गई और दोबारा बायोमेट्रिक मशीन में अंगूठा लगाने के नाम पर राशन देने का कार्य किया जा रहा था। ग्रामीणों ने बताया कि इससे पहले विगत 07 तारीख को जो राशन मिलने वाला था वह राशन कहां गया। कोटेदार ने अपनी दबंगई दिखाते हुए ग्रामीणों को बायोमेट्रिक मशीन लॉक होने की बात कही और बोला कि पहली बार का राशन अब नहीं मिलेगा तभी ग्रामीणों ने हंगामा काटना शुरू कर दिया। जब मीडिया कर्मियों ने कोटेदार से पूछा कि उनके यहां गरीबों का कितना स्टॉक आता है कोटेदार पुत्र विकास द्वारा बताया गया कि 07 कुंटल 30 किलो चना, 82 कुंटल 83 किलो गेहूं और 55 कुंतल 20 किलो चावल की खेप उतरती है। कोटेदार के यहां कार्ड धारकों की संख्या 600 के लगभग है। मात्र 250 लोगों के राशन का वितरण किया गया था। साढे तीन सौ लोगों से बायोमेट्रिक मशीन पर अंगूठा लगवाने के बाद राशन हड़पने का काम किया गया। हालांकि जब स्थिति काबू में नहीं हुई तब ग्रामीणों ने डायल 112 में सूचना देकर मौके पर पुलिस को बुलाया। पुलिस ने ग्रामीणों को काबू करना चाहा, परंतु हंगामा इतना ज्यादा था कि पुलिस विभाग के जवानों ने भी पीछे हटकर अपने उच्च अधिकारियों को सूचना देना उचित समझा और मौके पर मलवां थानाध्यक्ष समेत सहिली चौकी ने पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और कोटेदार को दोनों बार का राशन वितरण करने को कहा, परन्तु कोटेदार ने कुछ लोगों को राशन देकर कोटा बंद कर दिया और अपनी बीमारी का बहाना करते हुए घर पर आराम फरमा रहे हैं। कुल मिलाकर यह माना जाए तो लगभग ढाई लाख रुपए का राशन कोटेदार द्वारा खाया गया और विभागीय अधिकारी मौन धारण किए हुए मूकदर्शक बने है!

व्यापारी आयोग गठन को लेकर व्यापार मण्डल ने बुलन्द की आवाज

फतेहपुर। उद्योग व्यापार मण्डल प्रदेश की कैबिनेट बैठक आहूत की गई। उपरोक्त बैठक में पूर्व निर्धारित जनपद की समस्त भंग कमेटियों के उपरांत संस्थापक अध्यक्ष किशन मल्होत्रा ने कोर कमेटी का निर्माण किया। 15 सदस्य कोर कमेटी में राजेश वर्मा, अनिल वर्मा, मनोज साहू, कृष्ण कुमार तिवारी, सैराज अहमद खान, गुरमीत सिंह, अशरफ अली, प्रेम दत्त उमराव, संजय श्रीवास्तव, बबलू भारतीय, संदीप श्रीवास्तव, अभिषेक रायजादा, अंचल रस्तोगी और मो0 असलम को ध्वनिमत से पारित करते हुए मनोनीत किया गया। निर्णय आवंटित कोर कमेटी द्वारा प्रदेश के अन्य जिलों जनपद की जिला इकाई/नगर युवा /महिला/ तहसील /कस्बा /ब्लॉक /वार्ड/ ट्रेड फ्रंटल सहित अन्य सभी संगठनों का गठन तय करेगा । कोर कमेटी अनुसार साधारण सदस्यता वार्षिक शुल्क डेढ़ सौ रूपये, सक्रिय सदस्यता शुल्क पाँच सौ रूपया संगठन द्वारा तय की गई। जनपद की तहसील कस्बा के संगठन का कार्यकाल 3 वर्ष नामित किया गया। कोर कमेटी द्वारा व्यापारी हितों हेतु नियमावली का निर्माण किया जाएगा। उपरोक्त बैठक में कोर कमेटी की आपसी सहमति से ड्रेस कोड़ का निर्धारण सफेद शर्ट व काली पैंट के रूप में किया गया कोर कमेटी ने किया। सितंबर में जिला इकाई का गठन तेजस्वी पदाधिकारियों को सम्मिलित कर किया जाएगा। अध्यक्ष ने कहा कि शासन सत्ता पर बैठे लोगों से व्यापारी आयोग बनाने की मांग की जाएगी। जिससे प्रदेश के व्यापारी के साथ होने वाली घटनाओं का जल्द से जल्द निस्तारण कर व्यापारियों को अकी समस्याओं से मुक्ति मिल सके।

सेवानिवृत्त शिक्षक समेत तीन ने खाया जहरीला पदार्थ

बिन्दकी, फतेहपुर । तीन अलग-अलग स्थानों में घरेलू कलह के चलते एक रिटायर्ड शिक्षक समेत तीन लोगों ने जहरीला पदार्थ खा लिया। हालत गंभीर हुई तो परिजनों ने इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। दो युवकों को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य में भर्ती कराया गया। जबकि रिटायर्ड शिक्षक की हालत गंभीर देखते हुए रेफर कर दिया गया। जिसे का इलाज कानपुर के एक निजी अस्पताल में चल रहा है।

जानकारी के अनुसार कोतवाली क्षेत्र के सिलावन गांव में घरेलू कलह के चलते रिटायर्ड शिक्षक जगत नारायण उत्तम उम्र 75 वर्ष ने जहरीला पदार्थ खा लिया। हालत बिगड़ी तो परिजनों ने इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया। हालत चिंताजनक देखते हुए चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार बाद रेफर कर दिया रिटायर्ड शिक्षक को गंभीर हालत में कानपुर में भर्ती कराया गया। बताया जाता है कि रिटायर शिक्षक की पत्नी गांव की प्रधान भी रह चुकी हैं और वह स्वयं प्रधान प्रतिनिधि भी रह चुके हैं। वहीं दूसरी ओर नगर के मोहल्ला बजरिया में घरेलू कचरे के चलते मो0 आफ्ताब उम्र 20 वर्ष पुत्र इसरार ने जहरीला पदार्थ खा लिया। हालत गंभीर होने पर सीएचसी में भर्ती कराया गया। वहीं तीसरा मामला कोतवाली बिन्दकी क्षेत्र के नंदपुर गांव का है। जहां पर घरेलू कलह के चलते सर्वेश कुमार उम्र 21 वर्ष पुत्र रमेश ने जहरीला पदार्थ खा लिया। हालत बिगड़ी तो इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया। हालांकि काफी दिन चली उपचार के बाद मो0 आफ्ताब तथा सर्वेश कुमार की हालत में सुधार हुआ तो परिजन वापस घर ले गए।

पोस्टमैन व एमटीएस कर्मचारियों का द्विवार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

फतेहपुर । शहर के प्रधान डाकघर परिसर में पोस्टमैन व एमटीएस कर्मचारियों की ऑल इंडिया यूनियन की फतेहपुर इकाई का द्विवार्षिक सम्मेलन संपन्न हुआ। जिसमें पूरे जनपद से कर्मचारियों ने भाग लिया। अधिवेशन में सर्वसम्मति से मेवालाल मौर्य को अध्यक्ष व आदित्य कुमार को मंडली सचिव मनोनीत किया गया। सभी वक्ताओं ने कर्मचारी एकता पर बल देते हुए अपने अधिकारियों के लिए संघ के बैनर तले अपनी लड़ाई लड़ने व शोषण को बर्दाश्त नहीं करने का आवाहन किया। अधिवेशन में जनपद में ऑल इंडिया यूनियन के वरिष्ठ कर्मचारी नेता अशोक दीक्षित, संजय मिश्रा, शत्रुघ्न लाल, अमित सोनी, रामनरेश आदि ने अपने संबोधन में नवगठित कार्यकारिणी को बधाई व शुभकामनाएं प्रदान करते हुए पूरा सहयोग व मार्गदर्शन देने का आश्वासन दिया। सम्मेलन में प्रमुख रूप से जयशंकर गुप्ता, सुनील श्रीवास्तव, गिरीश कुमार, मनोज कुमार पाल, राम चंद्र पाल, आनंद प्रकाश, केदार पाल, राकेश सक्सेना आदि मौजूद रहे।

सहकारी समिति हरिहरगंज सचिव ने खारिज किये लगाये गये आरोप

फतेहपुर । क्षेत्रीय सहकारी समिति लि0 हरिहरगंज के सचिव श्याम सुंदर श्रीवास्तव ने अपने हाईस्कूल के अंकपत्र में उम्र को लेकर लगे आरोपो को सिरे से खारिज करते हुए कहते है कि जून 2014 में उनके समस्त शैक्षणिक एवं कुछ और जरूरी कागजात गुम हो गये थे, जिसकी बाकायदे सूचना भी कोतवाली पुलिस को दे दी थी। उनके द्वारा यूपी बोर्ड से सम्बंधित प्रपत्रों की मूलप्रति प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है, किन्तु कोरोंना काल चलने के कारण प्रपत्र प्राप्त होने में और विलम्ब हो रहा है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग उनसे ईर्ष्या रखते है, वही अनायास शिकायते करते रहते है। उन पर लगाये जा रहे आरोप निराधार है, उन्होंने प्रपत्रों से कोई छेड़छाड नही की है। यूपी बोर्ड स्तर से प्रयास जारी है। मूलप्रति प्राप्त होते ही विभागीय अधिकारियों को उपलब्ध करा दी जायेंगी।

बसपा की बैठक हैबतपुर में हुई आहूत

फतेहपुर । बहुजन समाज पार्टी की सदर विधानसभा के चौफेरवा सेक्टर की बैठक हैबतपुर गांव में आहूत हुई जिसमें सेक्टर गठन व समीक्षा बैठक आहूत हुई। बैठक के मुख्य अतिथि के रूप में आरिश सिद्दीकी उपस्थित रहें। बैठक संचालन विनोद गौतम ने किया। बैठक में विधानसभा अध्यक्ष पीके गौतम, पूर्व जिला प्रभारी जगदीश पासी, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष ललित गौतम, विधानसभा उपाध्यक्ष मान सिंह लोधी आदि मौजूद रहे।

सोलह कोरोना पॉजीटिव मिले

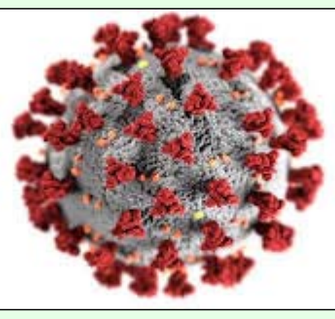

फतेहपुर । कोरोना वायरस संक्रमितो की ताजा रिपोर्ट में पिछले 24 घण्टे के दौरान जनपद में 16 और संक्रमितो की पुष्टि हुई है। जनपद में कोरोना के ऐक्टिव केस 186 हो गये हैं। वहीं स्वस्थ्य होने वालों की संख्या 730 है। कुल कोरोना संक्रमितों की संख्या 1008 हो चुकी है।

चौतीस पर शांतिभंग की कार्रवाई

फतेहपुर । जनपद के अलग-अलग थाना क्षेत्रों के अन्तर्गत रविवार की सुबह पुलिस ने दो दर्जन से अधिक लोगों के विरूद्ध 151 के तहत कार्रवाई की है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार सदर कोतवाली प्रभारी दो, मलवां पांच, कल्यानपुर एक, सुल्तानपुर घोष आठ, गाजीपुर दो, ललौली चार, हथगाम चार, थरियांव सात तथा असोथर थानाध्यक्ष ने एक पर शांति भंग के तहत कार्रवाई की है।

पैतीस क्वार्टर देशी शराब बरामद

फतेहपुर । गाजीपुर थाना क्षेत्र के अन्तर्गत गश्त के दौरान शाह चौकी इंचार्ज ने अवैध शराब के साथ युवक को गिरफ्तार कर उसके विरूद्ध कार्रवाई की है। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के शाह चौकी इंचार्ज संदीप कुमार तिवारी आज सुबह अपने हमराही सिपाहियों के साथ क्षेत्र में गश्त कर रहे थे। तभी मुखबिर की सूचना पर झल्लू यादव पुत्र रामचन्द्र यादव निवासी महमूदपुर को गिरफ्तार करते हुए उसके कब्जे से 35 क्वार्टर देशी शराब बरामद कर उसके विरूद्ध कार्रवाई की है।

धारदार हथियार के साथ दो गिरफ्तार

जहानाबाद, फतेहपुर । थाने में तैनात उपनिरीक्षक नीरज कुशवाहा गश्त पर थे तभी उन्हें जानकारी मिली कि कापिल मोड के पास दो युवक संदिग्ध अवस्था में किसी वारदात को अंजाम देने की फिराक पर खड़े हुए। जैसे ही उपनिरीक्षक हमराह सिपाहियों के साथ मुखबिर के बताए गए स्थान पर पहुंचे तो दोनों युवक देखकर भागने लगे जिस पर पुलिस बल ने उन्हें दौड़ा कर हिरासत पर ले लिया। गिरफ्तार युवकों ने अपना नाम गुलफाम उर्फ छोटे पुत्र मुख्तार, दानिश पुत्र सगीर निवासी छोटी बजरिया बताया। तलाशी लेने के दौरान उनके पास से अवैध चाकू बरामद हुई। थाना प्रभारी संतोष शर्मा ने बताया दोनों युवकों के विरुद्ध अभियोग पंजीकृत कर लिया गया है।

ससुराल गये युवक का शव फांसी से झूलता मिला

परिजनों ने लगाया हत्या का आरोप

खागा, फतेहपुर । खखरेरू थाना क्षेत्र के पुरमाई गांव अपनी ससुराल आये 25 वर्षीय युवक ने संदिग्ध परिस्थितियों में शनिवार की रात फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। उधर मृतक के परिजनों ने युवक की हत्या कर शव को पेड़ पर लटकाये जाने का आरोप लगाया है। जानकारी के अनुसार किशनपुर थाना क्षेत्र के गढ़ा मजरा जनानतारा निवासी ननका सोनकर का पुत्र वीरेंद्र सोनकर शनिवार को थाना क्षेत्र के पुरमई गांव अपनी ससुराल आया था। वीरेंद्र का ससुराल में पत्नी साधना और उसके परिजनों से किसी बात को लेकर विवाद हुआ। उसके बाद गांव के बाहर मो. इलियास के बाग में घटना को अंजाम दिया। घटना की जानकारी मिलने पर परिजन मौके पर पहुंचे। शव देखकर सभी अचंभित रह गये। उधर सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। युवक की मौत की जानकारी मिलते ही परिजनों के बीच हड़कम्प मच गया। परिजन थाने पहुंचे और युवक की हत्या कर शव को पेड़ पर लटकाये जाने का आरोप लगाया। प्रभारी निरीक्षक खखरेरू नागेन्द्र कुमार नागर ने बताया कि युवक ने आत्महत्या की है या हत्या हुयी है पीएम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चलेगा। उन्होंने बताया कि मृतक के परिजनों ने पत्नी समेत अन्य ससुरालीजनों के खिलाफ गले रस्सी से फांसी लगाकर मार डालने का आरोप लगाया है।

एचटी लाइन की चपेट में आकर युवक झुलसा

गाजीपुर, फतेहपुर (प्रभात व्यूज)। थाना क्षेत्र के फरीदाबाद टिकरी निवासी राम मिलन पाल पुत्र रजवा पाल उम्र 45 वर्ष की ग्यारह हजार एचटी, विद्युत लाइन के झूलते हुए तार की चपेट में आने से घायल हो गया। जानकारी के अनुसार राम मिलन पाल पुत्र रजवा पाल रविवार दोपहर लगभग 12 बजे जंगल भेड़ चराने गया था। वही धूप अधिक होने के कारण जैसे ही छाता लेकर जर्जर झूलते एचटी विद्युत लाइन के नीचे से निकला वैसे ही करंट की चपेट में आ गया। वहीं पास के अन्य चारवाहे दौड़ कर किसी तरह उसकी जान बचाई और परिजनों को सूचना दी। घटना की सूचना पाकर परिजन मौके पर पहुंच कर उसे इलाज हेतु निजी अस्पताल ले गए। गाजीपुर औगासी फीडर में आए दिन ऐसी घटना विद्युत विभाग की लापरवाही से होती रहती है। औगासी फीडर की एचटी विद्युत लाइन के जर्जर झूलते तार कब यमराज बन जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। फिर भी विद्युत विभाग सोया है। सोए हुए विद्युत विभाग के अधिकारियों को किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार है। औगासी फीडर लाइनमैनो और ऊपर वाले के भरोसे चल रहीं है।

नपाप सफाई इंस्पेक्टर ने सैनेटाइजेशन कार्य का लिया जायजा

बिन्दकी, फतेहपुर । नगर में कोरोना वायरस संक्रमण कम होने का नाम नहीं ले रहा। लोग सामाजिक दूरी का पालन नहीं करते। तमाम लोग मास्क भी नहीं लगाते, जिसका परिणाम है कि कोरोना वायरस कम होने की जगह बढ़ता जा रहा है। इसी के चलते नगर के 11 स्थानों पर व्यापक रूप से सैनेटाइजेशन किया गया। जिस का निरीक्षण नगर पालिका के सफाई इंस्पेक्टर ने किया। साथ में तहसील के भी लोग मौजूद रहे। रविवार को कोरोना वायरस संक्रमण से बचाव के लिए नगर के विभिन्न स्थानों पर व्यापक रूप से दवा का छिड़काव कर सैनेटाइजेशन किया गया। नगर के किराना गली, बर्तन बाजार, बजाजा गली, नजाही बाजार, फाटक बाजार, खजुहा चौराहा, नेहरू इंटर कॉलेज रोड, रामलीला मैदान के समीप कटरा तथा बजरिया मोहल्ले में व्यापक रूप से सैनेटाइजेशन कराया गया। जिसका नगर पालिका परिषद के सफाई स्पेक्टर राजेंद्र सिंह ने किया उनके साथ उनकी कस्बा लेखपाल भान सिंह भी मौजूद रहे। सफाई इंस्पेक्टर ने मौजूद सफाई नायक रोशन को बेहतर सजेशन का निर्देश दिया। इस मौके पर नगर पालिका परिषद के सफाई इंस्पेक्टर तथा कस्बा लेखपाल भान सिंह ने लोगों से कोरोनावायरस संक्रमण से बचाव की अपील की तथा कहा कि बेवजह घरों से बाहर न निकलें, बाहर निकले तो 2 गज दूरी मास्क जरूरी का पालन करें और समय-समय पर हाथ भी साफ करते रहे।

अन्ना मवेशियों ने बढ़ाई किसानों की समस्या

फतेहपुर । अन्ना मवेशी धान की फसल को चंपत कर रहे है। लगातार किसान रतजगा कर अपनी फसलो को बचाने के लिये चिंतित है। मलवां ब्लाक क्षेत्र के जलाला गांव के युवा समाजसेवी आलोक गौड़ ने बताया कि इन दिनों धान की फसल खेतों पर लगी हुई है, जिसकी रखवाली करने के लिए किसानों को रतजगा करना पड़ रहा है, क्योकि जैसे ही किसान किसी काम व खाना खाने आदि के लिए खेत छोड़कर चले जाते है तो अन्ना मवेशी खेतों में घुस जाते है और फसल को नुकसान पहुँचा रहे है। उन्होने बताया कि क्षेत्र के किसानों के लिए अन्ना मवेशी बड़ी समस्या बने हुए है।

छह माह पूर्व सड़क दुर्घटना में घायल वृद्ध ने तोड़ा दम

फतेहपुर । विगत छः माह पूर्व सडक हादसे में घायल कोमा में गये लगभग 57 वर्षीय वृद्ध की आज सुबह उपचार के दौरान मौत हो गयी। जानकारी के अनुसार क्षेत्र के हरिहरगंज चूना गली मोहल्ला निवासी वृद्ध दुर्गेश त्रिवेदी पुत्र स्व0 रामनारायण त्रिवेदी विगत 04 मार्च को अपनी बहन की ससुराल चौडगरा के समीप स्थित गांव सवारी से उतर पैदल जा रहे थे तभी पीछे से तेज रफ्तार आ रहे तीन पहिया वाहन उन्हे टक्कर मार दिया। जिससे वह बुरी तरह घायल हो गये। उपचार के लिये बिन्दकी सीएचसी लाया गया। जहा से उसे सदर अस्पताल के लिये रिफर कर दिया लेकिन हालत न ठीक होने पर चिकित्सक ने कानपुर मेडिकल कालेज के लिये रिफर कर दिया। दो दिन इलाज के दौरान हालत न सुधरने पर कानपुर से लखनऊ रिफर कर दिया। जिनका इलाज चल रहा था। बताते है कि घटना वाले दिन से ही दुर्गेश त्रिवेदी कोमा में चले गये थें। आखिरकार जिन्दगी और मौत के बीच सघर्ष करते हुये आज सुबह वृद्ध ने दम तोड दिया।

कानपुर-जहानाबाद पुलिस ने छापा मारकर सौ शीशी अवैध शराब बरामद किया

जहानाबाद, फतेहपुर । थाना क्षेत्र के ग्राम नरैनी में एक निजी नलकूप पर नौबस्ता कानपुर व जहानाबाद थाना पुलिस ने संयुक्त रूप से छापामार कर शराब बनाने का केमिकल व 02 गत्ता बनी अवैध शराब बरामद कर कानपुर पुलिस ले गई। शनिवार देर शाम नौबस्ता पुलिस कानपुर ने मुखबिर की सूचना पर जहानाबाद पुलिस के साथ ग्राम नरैनी निवासी के ग्राम बसफरा के समीप रोटी मार्ग में स्थित एक ट्यूबबेल में छापा मारा। बताया जाता कि ट्यूबबेल स्वामी तो नहीं मिले, किन्तु पत्नी मौजूद थीं। जहां से पुलिस ने 02 पेटी (100) शीशी क्वाटर बनी देशी शराब एवं कई ड्रम मिलावटी शराब बनाने का केमिकल बरामद किया। पुलिस सूत्रों के अनुसार काफी दिनों से कानपुर नगर व देहात क्षेत्र में नकली शराब बिक्री की सूचना पुलिस को मिल रही थी, किंतु अवैध शराब कारोबारी अपना शातिराना अंदाज पर पड़ोसी जनपद के थाना जहानाबाद के निजी नलकूप का स्थान चुना था। कानपुर नगर के नौबस्ता पुलिस ने मुखबिर के जरिए जानकारी हासिल करने के बाद जहानाबाद पुलिस बल को ले जाकर उपरोक्त नलकूप पर छापा मारा। जहां पर बताया जा रहा है अवैध रूप से बनी 02 पेटी शराब व ड्रम में केमिकल बरामद किया गया है। इस संबंध में थाना प्रभारी निरीक्षक संतोष शर्मा ने बताया कि कानपुर पुलिस की सूचना पर उन्होंने एक ट्यूबवेल पर छापा मारा था जिस पर कुछ केमिकल बरामद हुआ है जो कानपुर नगर के नौबस्ता पुलिस अपने कब्जे में ली गई है।

संदिग्ध परिस्थितियों में नव विवाहिता ने फांसी लगाकर दी जान

मृतका के पिता को थाने में बिठाने पर परिजनों ने काटा हंगामा

फतेहपुर । हुसैनगंज थाना क्षेत्र के गोवर्धनपुर गांव में संदिग्ध परिस्थितियों में नवविवाहिता का शव फांसी के फंदे में लटका मिला। जिसके बाद मृतका के परिजनों ने ससुराली जनों पर हत्या का आरोप लगाते हुए पुलिस को सूचना दी लेकिन पुलिस आरोपियों को पकड़ने के बजाए मृतका के पिता को थाने में बैठा लिया। जिसके बाद परिजनों ने कलेक्ट्रेट में पहुंचकर हंगामा काटा। प्रेमिका के परिजनों का आरोप है कि बेटी ने एक साल पहले दिल्ली में लव मैरिज की थी। 20 दिन पूर्व उसे दामाद हुसेनगंज के गोवर्धनपुर लेकर के आया था। जहां पर उसके घर वालों ने उसे फांसी लगाकर के मार डाला और भाग खड़े हुए। घटना की सूचना मिलते ही दिल्ली से गांव पहुंचे तो देखा तो बेटी का शव फांसी के फंदे पर लटका था जिसकी सूचना पुलिस को दिया, लेकिन पुलिस कार्यवाही करने के बजाय मृतका के पिता को थाने में बंद कर दिया। वहीं परिजनों ने डीएम आफिस में पहुंचकर हंगामा काटते हुए आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। वहीं पुलिस ने बताया कि परिजनों की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है, मृतका के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज जांच कराई जा रही है।

पुलिस ने आधा दर्जन वांछितों को दबोचा

फतेहपुर । पुलिस अधीक्षक प्रशांत वर्मा के दिशा-निर्देशन में चलाये जा रहे धर पकड़ अभियान के तहत जनपद के लगभग आधा दर्जन थानों की पुलिस ने वांछित चल रहे कई लोगों को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार ललौली थाने के उपनिरीक्षक प्रवीण कुमार सिंह आज सुबह अपने हमराही सिपाहियों के साथ क्षेत्र में गश्त कर रहे थे तभी मुखबिर की सूचना पर वांछित चल रहे मोनू तिवारी पुत्र विजय शकर तिवारी निवासी बरवा थाना जाफरगंज को गिरफ्तार किया है। इसी क्रम में हथगाम थानाध्यक्ष ने गश्त करते हुए जमील पुत्र सुलेमान निवासी पट्टी शाह को गिरफ्तार किया है। जबकि जहानाबाद थाने के उपनिरीक्षक नीरज कुमार कुशवाहा ने गश्त के दौरान वांछित चल रहे गुलफाम उर्फछोटू पुत्र मुख्तार, दानिश पुत्र सगीर निवासीगण छोटी बजरिया कोड़ा जहानाबाद को गिरफ्तार किया है। इसी तरह हुसैनगंज थाना प्रभारी ने गश्त करते हुए साहिल पुत्र स्व0 लालजी निवासी छेऊका को गिरफ्तार किया है। वहीं थरियांव थाने के उपनिरीक्षक उपदेश कुमार ने गश्त के दौरान अमीन पुत्र स्व0 हमीद निवासी गड्डूपुर थाना असोथर, रहमान पुत्र दलवीर निवासी किचेद थाना बबेरू जनपद बांदा हाल पता गड्डूपुर, रोशिम पुत्र रशीद निवासी गड्डूपुर को गिरफ्तार किया है।

जोन सात का औचक निरक्षण करते नवनियुक्त नगर आयुक्त।

प्रधान मर्डर पर बोली प्रियंका

यूपी में अपराधियों का राज संविधान और कानून पर हावी

लखनऊ, संवाददाता। प्रदेश में बदहाल कानून व्यवस्था को लेकर कांग्रेस से लेकर सपा तक हर विपक्षी पार्टीयों ने भाजपा पर लगातार निशाना साधते ही रहते है। उत्तर प्रदेश में दलितों और कमजोर वर्गों के खिलाफ हो रही घटनाएं बढ़ती जा रही है। आजमगढ़ में दलित प्रधान सत्यमेव जयते की हत्या के बाद अब बस्ती से महिला ग्राम प्रधान की हत्या की खबर सामने आई है। बस्ती में हुई इस घटना और लगातार सूबे में दलितों की हत्या को लेकर रविवार कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने एक बार फिर योगी सरकार पर निशाना साधा है। वंचित तबकों व महिलाओं का पंचायती राज व्यवस्था में प्रतिनिधित्व हो इसके लिए संविधान में व्यवस्था की गई। लेकिन यूपी में कुछ दिनों पहले आजमगढ़ में

सत्यमेव जयते की हत्या और अब बस्ती में प्रभावती की हत्या हो जाना साफदिखाता है कि यहां अपराधियों का राज संविधान व कानूनी राज पर हावी है। प्रियंका गांधी ने ट्वीट कर लिखा है कि वंचित तबकों और महिलाओं का पंचायती राज व्यवस्था में प्रतिनिधित्व हो इसके लिए संविधान में व्यवस्था की गई। लेकिन यूपी में कुछ दिनों पहले आजमगढ़ में सत्यमेव जयते की हत्या और अब बस्ती में प्रभावती की हत्या हो जाना साफ दिखाता है कि यहां अपराधियों का राज संविधान और कानूनी राज पर हावी है। दरअसल बस्ती के परसरामपुर थानांतर्गत नेवादा ग्राम पंचायत में प्रधानी चुनाव की रंजिश में महिला ग्राम प्रधान की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। महिला प्रधान ने जिला अस्पताल अयोध्या ले जाते वक्त रास्ते में दम तोड़ दिया। शव घर पर छोड़कर प्रधान का पुत्र तहरीर देने थाने पहुंचा। उसने गांव के आधा दर्जन से अधिक लोगों को नामजद करते हुए तहरीर दी है। वहीं पुलिस अभी किसी नतीजे पर नहीं पहुंची है। वहीं हत्या की सूचना पर अपर पुलिस अधीक्षक रविन्द्र कुमार सिंह ने नेवादा गांव पहुंचकर मौका मुआयना किया और बयान दर्ज किए। शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस का कहना है कि महिला प्रधान की मौत कैसे हुई, इसकी जांच के बाद कार्रवाई की बात कही है।

आतंकी अबू यूसुफ पर बड़ा खुलासा

आईएसआईएस के इशारे पर बनाया था ये बड़ा प्लान

लखनऊ, संवाददाता। पकड़े गए आईएसआईएस के संदिग्ध आतंकी अबू यूसुफ से पुलिस और खुफ्फिा एजेंसियां लगातार पूछताछ कर रही हैं। ऐसे में संदिग्ध आतंकी के बारे में बड़ा खुलासा हुआ है। बताया जा रहा है कि अबू यूसुफ टेलीग्राम ग्रुप के माध्यम से आईएसआईएस से जुड़ा था। जिसने बम बनाकर दहशत देश में दहशत पैदा करने का बड़ा प्लान बनाया था।

बताया जा रहा है कि 2005 में 6 महीने टूरिस्ट वीजा पर दुबई गया था, वहीं दुबई से लौटकर कुछ समय हैदराबाद में था।

जानकारी के मुताबिक, 2006 से 2011 से सऊदी अरब में अबू यूसुफ गया था। इस बीच 2011 में आयशा से उसने निकाह कर लिया था। पीओपी का काम करने वाला अबू यूसुफने सुसाइड बम बनाने की पूरी तैयारी कर ली थी। 2015 में 15 दिन के लिए खाड़ी देश कतर में काम करने के बाद वो सीधे उत्तराखंड गया था। इसी बीच उत्तराखंड में एक दुर्घटना का शिकार हो गया, जिसके कारण अबू यूसुफ की रीढ़ की हड्डी में चोट लग गई थी। जिसके बाद उसने उतरौला में मेडिकल की दुकान खोली थी। बताया जा रहा है कि अबू दुकान पर बहुत कम बैठता था, क्योंकि उसका मकसद बम बनाकर धमका करना था, जिसके कारण वो ज्यादा समय यू ट्यूब पर वीडियो देखकर नया-नया प्लान बना रहा था।

भाजपा सरकार यूपी में हर मोर्चे पर विफल: डॉ कुशवाहा

लखनऊ, संवाददाता। समाजवादी पार्टी को मजबूत बनाने व कुशवाहा समाज को काफी तादात में सपा से जोड़ने को लेकर उत्तर प्रदेश के तमाम जिलो में समाज के लोगों से सम्पर्क किया जा रहा है। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ एस पी सिंह कुशवाहा ने बताया कि कुशवाहा समाज के लोगों को समाजवादी पार्टी से जोड़ने के लिए सोशल मीडिया व अन्य माध्यमो से यूपी के जनपदों में इसे लेकर दौरे भी किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कुशवाहा समाज को भरोसा दिलाया है की समाज को सम्मान व भागीदारी पूर्ण रूप से दी जाएगी। उन्होंने बताया कि काफी संख्या में कुशवाहा, शाक्य ,सैनी व मौर्य समाज के लोग पार्टी में शामिल हो रहे हैं। इन समाज के लोगों को समाजवादी पार्टी में उचित सम्मान मिलेगा। डॉ कुशवाहा ने कहा कि उत्तर प्रदेश में कुशवाहा, शाक्य, सैनी, मौर्य समाज के लोगो को बसपा,भाजपा और कांग्रेस ने वोट बैंक समझा,बारी बारी से उन्हें लूटा और इन समाज के लोगों को रास्ते मे छोड़ दिया। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी में समाज के लोगों को ज्यादा से ज्यादा भागीदारी दिलाकर उनकी समस्या का समाधान कराया जाएगा। इसे लेकर पूरे सूबे में हर जिले में गांव स्तर तक सपा संगठन को मजबूत बनाया जाएगा। डॉ कुशवाहा ने राज्य की योगी सरकार को हर मोर्चे पर विफल बताते हुए कहा कि योगी सरकार न लोगो को रोजगार मुहैया करवा पा रही है और न ही किसानों की समस्या हल करवा पा रही है।यही नहीं यूपी में अपराध और अपराधियों पर नकेल कस पाने में योगी सरकार की जीरो टालरेंस की नीति भी फेल साबित हो गयी है। उन्होंने यूपी में जंगलराज का आरोप लगाते हुए कहा कि आये दिन यहां रेप और हत्या जैसे जघन्य अपराध हो रहे हैं। सपा के वरिष्ठ नेता ने कहा कि कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से लोगों को बचाने और उन्हें इलाज मुहैया कराने में भाजपा सरकार पूरी तरह से फेल हो गयी है।

शहीदों के नाम पर सड़क मार्ग बनवाएगी योगी सरकार,7 शहरों का होगा नामकरण

लखनऊ, संवाददाता। वीर शहीदों के बलिदान का कोई मोल नहीं होता है। इन्हें केवल सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है। ऐसे में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए प्रदेश के कई शहरों की सड़क का नाम शहीदों के नाम पर करने की संस्तुति दे दी है। बता दें कि पुलवामा आतंकी हमले में शहीद अजय कुमार के नाम पर गाजियाबाद के मोदीनगर पतला निवाड़ी रघुनाथपुर मार्ग का नामकरण शहीद अजय कुमार मार्ग के नाम से किए जाने की संस्तुति सीएम ने दे दी है। इसी तरह कारगिल युद्ध में शहीद हुए नायक अशोक कुमार बाल्मिकी का जिला बिजनौर के पीना से चांदपुर मार्ग का नामकरण शहीद नायक अशोक कुमार बाल्मिकी मार्ग से किए जाने की संस्तुति प्रदान है। कानपुर देहात के विकास खण्ड सरवनखेड़ा के अंतर्गत रसूलपुर गोगोमऊ दुआरी सम्पर्क मार्ग का नामकरण शहीद बड़े सिंह मार्ग के नाम से करने की संस्तुति दी गई है। पुलवामा आतंकी हमले में शहीद हुए स्व. रमेश यादव वाराणसी के ग्राम मिल्कोपुर उमरहा वाया तोफापुर मार्ग का नामकरण शहीद रमेश यादव मार्ग के नाम से करने की स्वीकृति प्रदान की है। त्रिपुरा में शहीद हुए बजरंगी विश्वकर्मा की याद में अम्बेडकर नगर के बरियावन से टाण्डा मार्ग का नामकरण शहीद बजरंगी विश्वकर्मा मार्ग होगा।

निगोहां में तिहरे हत्याकांड की गुत्थी पुलिस के लिए चुनौती

लखनऊ, संवाददाता। निगोहां में तिहरे हत्याकांड की गुत्थी सुलझाना पुलिस के लिए चुनौती बनी हुई है। पुलिस को छानबीन में घटनास्थल से थोड़ी दूर पर एक मोबाइल फोन और टार्च पड़ा मिला है। तीन दिन पूर्व यहां बुजुर्ग दंपति और निजी गार्ड की हत्या के मामले में अब पुलिस यह पता लगा रही है कि वह मोबाइल फोन किसका है। पुलिस तिहरे हत्याकांड में संपति विवाद की दिशा में पड़ताल कर रही है। पड़ताल के दौरान पुलिस को एक चौकाने वाली बात पता चली है। जांच में सामने आया है कि निजी गार्ड सत्रोहन राजस्व विभाग के दस्तावेज में पहले से ही मृत घोषित है। इस तथ्य के उजागर होने के बाद गुत्थी और उलझ गई है। पुलिस राजस्व विभाग की टीम के साथ इसके बारे में जानकारी कर रही है। वारदात के राजफाश के लिए उन्नाव और रायबरेली की टीम को भी लगाया गया है। पुलिस ने हिरासत में लिए गए कुछ लोगों से कई बिंदुओं पर पूछताछ की है, लेकिन हत्या का कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है। नगराम मोड़ पर हाईवे के किनारे मकान में बुजुर्ग दंपति रामसनेही और राम जानकी की हत्या कर दी गई थी। वहीं थोड़ी दूर निजी गार्ड सत्रोहन का भी शव झाड़ियों में मिला था। तीनों के सिर पर पत्थर से प्रहार कर हत्या की गई थी। पुलिस बुजुर्ग दंपति और निजी गार्ड की हत्या के बीच संबंध खंगाल रही है। हालांकि अभी तक वह हमलावरों को गिरफ्तार नहीं कर सकी है।

पंचायती राज अधिकारी के खिलाफ निदेशक से शिकायत

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश पंचायती राज सफाई कर्मचारी संघ ने निदेशक पंचायती राज को गोण्डा जनपद के छपिया विकास खण्ड में सहायक विकास अधिकारी पंचायत के पद पर स्थानान्तरित नंद कुमार के तबादला आदेश को पालन न कराकर दस दिनों कके अन्दर ही पूर्व से दोहरा कार्यभार देख रहे प्रभारी सहायक विकास अधिकारी पंचायत की तैनाती आदेश पर सवालिया निशान लगाते हुए इस मामले की जॉच कराये जाने की मांग की है। प्रदेश अध्यक्ष राजकुमार ने बताया कि विकासखण्ड में चर्चा है कि प्रभारी सहायक विकास अधिकारी पंचायत अनंत कुमार और जिला पंचायत राज अधिकारी सभाजीत पाण्डे के बीच लेनदेन की चर्चा है। इसी के कारण दस दिन पूर्व जारी किए गए आदेश का अनुपालन न कराकर पूर्व से प्रभारी के रूप में कार्य देख रहे अन्तत कुमार को दोहरा चार्ज सौप दिया गया। प्रदेश अध्यक्ष राजकुमार ने बताया कि जिला पंचायत राज अधिकारी सभाजीत पाण्डेय ने मुख्य विकास अधिकारी की अनुमति से 10 अगस्त 2020 को नंद कुमार सहायक विकास अधिकारी पंचायत को विकास खण्ड छपिया में चार्ज लेने के आदेश जारी किये। जब नंद कुमार पद भार ग्रहण करने पहुचे तो उनको पदभार नही दिया गया। इसकी लिखित रूप से जानकारी नंद कुमार ने खण्ड विकास अधिकारी को दी। इसके बावजूद उनके पत्र का कोई जबाब न देकर 19 अगस्त 2020 को पुनः जिला पंचायत राज अधिकारी ने एक आदेश जारी करते हुए पूर्व से अतिरिक्त प्रभार के रूप में कार्यभार देख रहे अनंत कुमार को ग्राम पंचायत अधिकारी के साथ सहायक विकास अधिकारी पंचायत के दोहरे कार्यभार का आदेश जारी कर दिया। राजकुमार ने इस सम्बंध में शंका जाहिर करते हुए निदेशक पंचायती राज को पत्र लिखकर मामले की गम्भीरता तथा भेदभाव का आरोप लगाते हुए इस मामले की जॉच कराने तथा 10 अगस्त 2020 को जारी आदेश का पहले अनुपालन कराने फिर कोई अग्रिम कार्रवाई की मांग की है।

अमीनाबाद गणेशोत्सव गणपति सहस्त्रनाम का हुआ पाठ

लखनऊ, संवाददाता। अमीनाबाद के राजा गणेशोत्सव में रविवार को गणपति के सहस्त्र नाम का पाठ पंडित नित्यानंद बाजपेई और पंडित महेष शास्त्री ने किया। इस क्रम मे सोमवार को कोरोना मुक्ति के लिए महा रुद्राभिषेक किया जाएगा। अमीनाबाद के राजा गणेशोत्सव का 30वां आयोजन कोरोना संकट के कारण इस साल प्रताप मार्केट के प्रतिष्ठित राम दरबार मंदिर में आयोजित किया जा रहा है। संयोजक अतुल अवस्थी ने बताया की इससे पहले यह गणेशोत्सव श्रीराम रोड स्थित शिव मंदिर के पास भव्य स्तर पर आयोजित किया जाता था। रविवार को ओम एकदंष्ट्राय नमः, ओम वक्रतुण्डाय नमः, ओम लम्बोदराय नमः, ओम विकटाय नमः, विघ्ननायकाय नमः, ओम सुमुखाय नमः, ओम लम्बकर्णाय नमः जैसे सहस्त्र नामों के माध्यम से गणपति के विशाल व्यक्तित्व के बारे में भक्तों को बताया गया।

आज बाराबंकी से राजधानी लखनऊ तक पदयात्रा

लखनऊ, संवाददाता। कोरोना संकट के समय देश व समाज में इलाज के नाम पर हो रहा भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या बन गई है। जो समाज के लोगों को मौत के करीब ले जा रही है। आपदा में अवसर तलाशने वाले ऐसे नौकरशाह भष्ट तंत्र का हिस्सा बन रहे है। ऐसे में कोविड-19 से संबंधित प्रकरण की उच्च स्तरीय जांच की मांग को लेकर 'भ्रष्टाचार निराकरण पदयात्रा' निकाली जा रही है। यह जानकारी हिन्दी पत्रकार एसोसिएशन उप्र के जिलाध्यक्ष एवं सामाजिक कार्यकर्ता पाटेश्वरी प्रसाद ने दी। श्री प्रसाद ने बताया कि आगामी 24 अगस्त दिन सोमवार को बाराबंकी से राजधानी लखनऊ तक पदयात्रा निकाली जाएगी। यह पदयात्रा सुबह 7 बजे नगर के गाँधी भवन सेप्रारम्भ होकर लखनऊ के हजरतगंज स्थित महात्मा गाँधी की प्रतिमा पर समाप्त होगी। तदोपरान्त महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल को एक 10 सूत्रीय मांगपत्र सौंपा जाएगा। इस पदयात्रा का नेतृत्व समाजवादी चिन्तक राजनाथ शर्मा करेंगें। जिसमें सामाजिक कार्यकर्ता रंजय शर्मा और उमानाथ यादव 'सोनू यादव' शामिल होंगे। श्री प्रसाद ने बताया कि कोरोना से संबंधित आइसोलेशन सेन्टर एवं निजी हॉस्पिटलों में बने एल-वन, एल-2, एल-3 समकक्ष हॉस्पिटल में व्याप्त भ्रष्टाचार और स्वास्थ्य सम्बंधी अनिमितताओं की जानकारी सार्वजनिक होने के बाद भी शासन व प्रशासन कोई कार्यवाही नही करता है। जो बेहद चिंताजनक है। श्री प्रसाद ने बताया कि सरकार की नीतियों को प्रभावित करने वाले नौकरशाहों पर कार्यवाही न होने भष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। भ्रष्टाचार पर जीरो टालरेंस की नीति के तहत योगी सरकार विफल हो रही है। कोरोना का सहारा लेकर कुछ प्रशासनिक अधिकारी, स्वास्थ्य अधिकारी भष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। जिनके उच्चस्तरीय जांच होनी चाहिए। पदयात्रा के सहयात्री रंजय शर्मा ने कहा कि कोरोना संकट के समय जनप्रतिनिधियों की भूमिका संदेहास्पद रही है। जिस जनता के वह प्रतिनिधि है, उनका पुरसाहाल लेने वाला कोई नही है। ऐसे में नौकरशाहों से ज्यादा दोषी जनप्रतिनिधि है जिनको भ्रष्टाचार की जानकारी होने के बाद भी मौन है।

गोमती नदी में उतराता मिला युवक का शव, शिनाख्त में जुटी पुलिस

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी लखनऊ के गोमती नदी में रविवार सुबह मछली पकड़ने गए मछवारों ने एक युवक का शव उतराता देख पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को नदी से बाहर निकलवाया। शव कई दिन पुराना लग रहा था। पुलिस ने शव की पहचान करवाने की कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिल सकी। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवा दिया गया है। पुलिस का कहना है कि शव की पहचान करवाने के प्रयास किए जा रहे हैं। यह घटना मड़ियांव थाना क्षेत्र स्थित घैला पुल के पास की है। यहां गोमती नदी चकेरी के पास 25 वर्षीय युवक का शव मिला है। मड़ियांव पुलिस का कहना है, कि मछली पकड़ने गए मछवारों ने शव को देखकर पुलिस कंट्रोल रूम पर बताया था। शव कहीं से बहता हुआ यहां तक आ पहुंचा है। मृत युवक का शव लगभग 4 से 5 दिन पुराना है। वहीं प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक युवक के शरीर पर कोई चोट नहीं है। पुलिस ने आशंका जताया है कि युवक ने कूदकर जान दी है। कपड़ो की तलाशी में कुछ नहीं मिला।

बाल आश्रम को किया सेनेटाइज बाटी खाद्य सामग्री और मास्क

लखनऊ, संवाददाता। लोगो को कोरोना वायरस से बचाने के लिए हिन्दी न्यूज पोर्टल जय कलम डॉट कॉम द्वारा चलाई जा रही मुहिम लगातार जारी है। जय कलम की टीम आज मोती नगर स्थित लीलावती मुंशी निराश्रित बालग्रह पहुची और बालग्रह के कोने कोने को सेनेटाइज किया। बालग्रह में रह रही अनाथ बच्चियों को जय कलम की टीम ने खाद्य सामग्री के अलावा मास्क भी बाटे। लीलावती मुंशी निराश्रित बालग्रह में अनाथ बच्चियों के साथ वृद्ध और विधवा महिलाएं भी रहती है। 1956 में पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंद्रा गांधी द्वारा इस बाल ग्रह का उद्घाटन किया गया था। जय कलम की ओर से बालग्रह को सेनाइज किये जाने पर बालग्रह की अधीक्षिका श्रीमती माया हंस ने टीम का धन्यवाद करते हुए बताया कि लगभग तीन साल से सरकार की तरफसे कोई योगदान नही दिया जा रहा है उन्होंने बताया कि 1 लाख 30 हजार रुपय बिजली का बिल बकाया होने की वजह से बिजली का कनेक्शन काट दिया गया है उन्होंने बताया कि बाल ग्रह में रहने वाली बच्चियों को परेशानी से बचाने के लिए तमाम लोगो ने मदद के हाथ बढ़ाए और बालग्रह में सोलर पैनल स्थापित करवाए गए सोलर पैनल के माध्यम से ही इस पूरे बाल आश्रम में बिजली आपूर्ति होती है। श्रीमती माया हंस ने बताया कि लीलावती मुंशी निराश्रित बालग्रह में रहने वाली अनाथ बच्चियों की मदद तमाम लोग दिल खोल कर करते है। बालग्रह को सेनेटाइज करने पहुची जय कलम की टीम ने बालग्रह के कोने कोने को सेनेटाइज किया। लोगो को कोरोना वायरस से बचाने के लिए जय कलम की टीम लगातार सेनेटाइजेशन और मास्क वितरण अभियान चला रही है मुहिम के दौरान जय कलम की टीम के द्वारा सभी धर्मों के धर्म स्थलों के साथ साथ थाने चौकियों और अस्पतालों को भी सेनेटाइज किया जा चुका है। लोगो को कोरोना वायरस से बचाने के लिए अभियान लगातार जारी रहेगा। मोती नगर स्थित लीलावती मुंशी निराश्रित बालग्रह में रह रही अनाथ बच्चियों को लोगो की मदद का इन्तिजार रहता है। बालग्रह की अधीक्षिका माया हंस ने बताया कि यदि कोई बच्चियों के खाने के लिए खाना देना चाहता है तो वो पकपकाया कहना स्वीकार नही करती है बल्कि कच्चा खाना स्वीकार करती है ताकि बच्चियों को कोरोना के खतरे से दूर रखा जा सके उन्होंने बताया कि यहां रह रही बच्चियों को कपड़ो के अलावा साबन मंजन आदि सामान की भी आवश्यकता है। कहां तो तय था चरागा हर एक घर के लिए यहां चिराग मय्यसर नही बच्चों के लिए लीलावती मुंशी निराश्रित बालग्रह के लिए ये पंक्तियां बिल्कुल सटीक है जहां 1 लाख 30 हजार का बिल बकाया होने पर बिजली विभाग ने अनाथ बच्चियों की परेशानी को अनदेखा करते हुए बिजली का कनेक्शन ही काट दिया।

दो लाख रूपये के नगद पुरस्कार से नवाजी जायेगी सांध्यिका

लखनऊ, संवाददाता। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, महानगर कैम्पस की मेधावी छात्रा सांध्यिका श्रीवास्तव को विद्यालय द्वारा दो लाख रूपये के नगद पुरस्कार से नवाजा जायेगा। सांध्यिका को यह पुरस्कार आई.एस.सी. (कक्षा-12) की बोर्ड परीक्षा में पूरे देश में टॉप करने के उपलक्ष्य में प्रदान किया जा रहा है, जिसने अपने मेधात्व का परचम लहराकर पूरे देश में विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। सी.एम.एस. की इस मेधावी छात्रा ने स्क्रूटनी के उपरान्त इस वर्ष की आई.एस.सी. (कक्षा-12) बोर्ड परीक्षा में अंग्रेजी एवं तीन अन्य विषयों में मिले सर्वोच्च अंको के आधार पर 99.75 प्रतिशत अंक अर्जित कर अपने मेधात्व का परचम लहराया है। रसायन शास्त्र विषय की दोबारा जाँच में सांध्यिका ने 98 के बजाय 100 अंक अर्जित किए हैं।

उत्तर प्रदेश में श्रम विरोधी विधेयक पास करने के खिलाफ वर्कर्स फ्रंट ने किया प्रदर्शन

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश विधानसभा व विधान परिषद में बिना वोटिंग कराए हुए ही उत्तर प्रदेश औद्योगिक विवाद संशोधन विधेयक 2020, उत्तर प्रदेश कारखाना अधिनियम संशोधन विधेयक 2020, उत्तर प्रदेश कतिपय श्रम विधियों में अस्थाई छूट संशोधन विधेयक 2020 और लोक संपत्ति व निजी संपत्ति विधेयक 2020 को पास कराए जाने के विरोध में आज वर्कर्स फ्रंट ने पूरे प्रदेश में विरोध प्रदर्शन आयोजित किया. यह जानकारी देते हुए वर्कर्स फ्रंट के प्रदेश अध्यक्ष दिनकर कपूर ने बताया कि प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक केंद्र सोनभद्र जनपद में अनपरा व ओबरा तापीय परियोजना, हिंडालको, रेणुकूट, आगरा, मऊ, बाराबंकी, फिरोजाबाद, लखनऊ समेत प्रदेश के विभिन्न जनपदों व औद्योगिक प्रतिष्ठानों में विरोध प्रदर्शन आयोजित किया गया. उन्होंने कहा आरएसएस-भाजपा की योगी सरकार कारपोरेट की सरकार है।

इस सरकार ने श्रम कानूनों में जो संशोधन किया है यह उत्तर प्रदेश में औद्योगिक विकास को अवरुद्ध करने का काम करेगा और प्रदेश में औद्योगिक अशांति को बढ़ावा देगा. उन्होंने कहा कि मजदूर संगठन ही नहीं देश के कुछ एक उद्योगपतियों तक ने सरकार को आगाह किया था कि श्रमिकों के हित में बने हुए कानूनों को खत्म करने से देश में औद्योगिक विकास में बाधा उत्पन्न होगी. दुनिया में जहाँ भी श्रम कानूनों को कमजोर किया गया है वहाँ बडेघ् नुकसान उठाने पडे हैं. उन्होंने कहा कि इन विधेयकों के बाद दरअसल उत्तर प्रदेश में सेफ्टी वाल्व के बतौर काम कर रहे श्रम विभाग को जो न्यूनतम अधिकार हासिल थे वह भी समाप्त कर दिए गए हैं और मजदूरों के हितों पर बड़ा कुठाराघात किया गया है. योगी सरकार ने हाईकोर्ट में हारने के बाद इन विधेयकों को लाने का फैसला किया है. इसकी वैधानिकता की जांच कराई जाएगी और यदि आवश्यकता पड़ी तो उन्हें हाईकोर्ट में चुनौती दी जाएगी. उन्होंने सभी मजदूर संगठनों से अपील की कि वह एकजुट हों और आरएसएस और भाजपा की योगी सरकार की इस मजदूर विरोधी गतिविधियों के खिलाफ अपना प्रतिवाद दर्ज करायें .वर्कर्स फ्रंट द्वारा आयोजित विरोध कार्यक्रमों का नेतृत्व सोनभद्र में कृपाशंकर पनिका, ठेका मजदूर यूनियन के मंत्री तेजधारी गुप्ता, तीरथ राज यादव, पूर्व सभासद नौशाद, पूर्व सभासद मारी, आगरा में इंजीनियर दुर्गा प्रसाद, लखनऊ में मोहम्मद कय्यूम, नेवाजी, बाराबंकी में यादवेंद्र प्रताप सिंह और मऊ में बुनकर वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष इकबाल अंसारी ने किया।

किसानों की समस्याओं को सुनने के बजाए विस में शायरी सुनाने में व्यस्त हैं योगी: राजभर

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश में खाद की कालाबाजारी को लेकर सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के अध्यक्ष और पूर्व मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने योगी सरकार पर जमकर हमला बोला है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि योगी सरकार को किसानों की चिंता नहीं है। वह सदन में शायरी सुनाने में व्यस्त है। उन्हें किसानों की आत्महत्या का कोई फर्क नहीं पड़ता है। सरकार किसानों के मुद्दे पर बात ही नहीं करना चाहती है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि योगी सरकार जल्द से जल्द किसानों को खाद पूर्ति कराएं।

सिमटते पाकिस्तान की उजागर होती करतूतें

भले ही फाइनेंशियल एक्सशन टास्क फोर्स की ब्लेक लिस्ट से बचने के लिए पाकिस्तान ने बड़ा दॉव खेलते हुए 88 आतंकवादियों की लिस्ट जारी कर दी है। इन पर दिखावटी कड़े प्रतिबंद लगा दिये हो लेकिन उसने विश्व के सामने 27 सालों से लगाए जा भारत के मोस्ट वाटेण्ड दाऊद के पाकिस्तान में होने तथा उसके कॉराची में तीन आवास होने का रिकार्ड देकर अपनी 27 वर्षों से छूपाये जा रहा झूठ को स्वंय उजागर कर दिया है। भले ही एफएटीएफ की बैठक को अभी कुछ समय है लेकिन इतन तय है कि अगर उस बैठक में पाकिस्तान के कारनामों पर कार्रवाई की गई और पाकस्तिान को ब्लेक लिस्ट कर दिया तो चीन की शरण के बावजूद पाकिस्तान को नेस्तानबूद होने से कोई बचा नही पाएगा। बुनियादी हकीकत को भुला देने वाले मुल्क पाकिस्तान को अगर दुनिया में खुद को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ रहा है, तो कोई आश्चर्य नहीं। अरब दुनिया में अलग-थलग पड़ने लगा पाकिस्तान अब चीन को साथ रखने के लिए और भी मजबूर है। पाकिस्तान की जो आक्रामक व अतार्किक नीतियां हैं, उनके मुताबिक कोई भी समझदार, न्यायपूर्ण देश खुलकर उसके साथ खड़ा नहीं हो सकता। यह विडंबना है कि पाकिस्तान को भाग-भागकर उस चीन के पास जाना पड़ता है, जिसे उस धर्म की कतई परवाह नहीं है, जिसके आधार पर कभी पाकिस्तान बना था। जहां नमाज पढ़ने और दाढ़ी रखने पर भी पाबंदी लगाई जा सकती है, वहां पाकिस्तान को किस रूप में होना चाहिए? शायद इस पर पाकिस्तान में कम ही लोग विचार करते हैं। वहां का सत्ता प्रतिष्ठान इतनी गहराई तक भारत विरोधी हो चुका है कि अपने देश की पहचान, आदर्श और संपदा की कीमत पर चीन से दोस्ती खरीदना चाहता है। यह बदलाव उसके भटकाव को ही साबित करता है। जिन मुस्लिम मुल्कों को वह अपना सहोदर मानता था, सऊदी अरब व संयुक्त अरब अमीरात, उनकी बेरुखी भी पाकिस्तान को सुधार के लिए प्रेरित नहीं कर पाई। पाकिस्तान समझ नहीं पा रहा है कि भारत का वजूद पिछले कुछ दशकों में खुद मुस्लिम मुल्कों में किस कदर मजबूत हो चुका है, तो दूसरी ओर, इन्हीं दशकों में पाकिस्तान का वजूद कितना सिमटता जा रहा है।पूरी दुनिया में आतंकवाद फैलाने वाला और कुख्यात आतंकवादियों को शरण देने वाला पाकिस्तान एक बार फिर से दुनिया के सामने बेनकाब हो गया। पाकिस्तान ने स्वीकार कर लिया था कि अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम उसके यहां छिपा हुआ है और ठीक अगले दिन पाकिस्तान का विदेश मंत्रालय अपनी बात से मुकर गया. पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने कहा कि दाऊद इब्राहिम पाकिस्तान में नहीं है।आतंकवादी तैयार करने वाला पाकिस्तान एक बार फिर अपने झूठे चरित्र के लिए दुनिया में शर्मसार हुआ है। पाकिस्तान ने ये स्वीकार किया है कि दाऊद इब्राहिम उसकी जमीन पर है लेकिन भारत के डर से उसने अब अपनी बात बदल दी है। पाकिस्तान को डर है कि भारत के लिए मोस्टवांटेड आतंकी को अपनी जमीन पर शरण देने बहुत खतरनाक साबित हो सकता है।अभी कुछ दिनों पूर्व कश्मीर को लेकर अपने अति उत्साह के कारण पाकिस्तान एक गहरी मुसीबत में फंस चुका है। सऊदी अरब ने उसके साथ हुआ कर्ज और तेल सप्लाई का समझौता रद्द कर दिया है। इस वजह से पाकिस्तान को न केवल 1 अरब डॉलर की तुरंत अदायगी करनी पड़ी बल्कि उधार में तेल की आपूर्ति बंद होने से उसके सामने अचानक एक बड़ा संकट खड़ा हो गया है। अपनी नाजायज हरकतों के कारण वैसे भी पाकिस्तान अरब देशों से अलगथलग हो चुका है। बुनियादी हकीकत को भुला देने वाले मुल्क पाकिस्तान को अगर दुनिया में खुद को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ रहा है, तो कोई आश्चर्य नहीं। अरब दुनिया में अलग-थलग पड़ने लगा पाकिस्तान अब चीन को साथ रखने के लिए और भी मजबूर है। पाकिस्तान की जो आक्रामक व अतार्किक नीतियां हैं, उनके मुताबिक कोई भी समझदार, न्यायपूर्ण देश खुलकर उसके साथ खड़ा नहीं हो सकता। यह विडंबना है कि पाकिस्तान को भाग-भागकर उस चीन के पास जाना पड़ता है, जिसे उस धर्म की कतई परवाह नहीं है, जिसके आधार पर कभी पाकिस्तान बना था। जहां नमाज पढ़ने और दाढ़ी रखने पर भी पाबंदी लगाई जा सकती है, वहां पाकिस्तान को किस रूप में होना चाहिए? शायद इस पर पाकिस्तान में कम ही लोग विचार करते हैं। वहां का सत्ता प्रतिष्ठान इतनी गहराई तक भारत विरोधी हो चुका है कि अपने देश की पहचान, आदर्श और संपदा की कीमत पर चीन से दोस्ती खरीदना चाहता है। यह बदलाव उसके भटकाव को ही साबित करता है। जिन मुस्लिम मुल्कों को वह अपना सहोदर मानता था, सऊदी अरब व संयुक्त अरब अमीरात, उनकी बेरुखी भी पाकिस्तान को सुधार के लिए प्रेरित नहीं कर पाई। पाकिस्तान समझ नहीं पा रहा है कि भारत का वजूद पिछले कुछ दशकों में खुद मुस्लिम मुल्कों में किस कदर मजबूत हो चुका है, तो दूसरी ओर, इन्हीं दशकों में पाकिस्तान का वजूद कितना सिमटता जा रहा है। एक समय था, जब अरब दुनिया में पाकिस्तान की थोड़ी-बहुत सुनी जाती थी, लेकिन विगत चार वर्षों में भारत की व्यापक नीतियां अरब मुल्कों को समझ में आने लगी हैं। इसके अलावा जो धर्म के नाम पर चीन में हो रहा है, वह भी अरब मुल्कों से छिपा हुआ नहीं है। पाकिस्तान इस पर कोई चर्चा नहीं करना चाहता, पर एक समय आएगा, जब यह बात कहीं न कहीं से उठेगी और तब सबसे ज्यादा तकलीफ पाकिस्तान को होगी। पाकिस्तान के विदेश मंत्री अपने सेना प्रमुख के अरब से लौटते ही चीन पहुंच गए हैं, जहां उनकी चीनी विदेश मंत्री से बात होगी। वहां भले ही यह कहा जा रहा हो कि भारत की कोई चर्चा नहीं होगी, लेकिन यह बात अब छिपी नहीं है कि कश्मीर और भारत विरोधी प्रस्तावों को लेकर संयुक्त राष्ट्र में चीन क्यों सक्रिय नजर आता है। संकेत साफ है, चीन और पाकिस्तान की बातचीत का एक मुख्य मुद्दा भारत ही है। खुद को आर्थिक रूप से गिरवी रखते हुए पाकिस्तान जिस तरह से भारत विरोधी सौदे-साजिशें करता आ रहा है, उसे समझना किसी के लिए भी मुश्किल नहीं है। कहना न होगा, भारत को चिंता की नहीं, सावधान रहने की जरूरत है। पाकिस्तान अपनी भारत विरोधी गलत नीतियों के कारण अकेला पड़ रहा है, साजिश हो या विलाप, चीन उसका आखिरी कंधा है। भारत की रणनीति सही है, जो भी देश लोकतंत्र, न्याय, पारदर्शिता, अमन-चौन और सद्भाव के दुश्मन हैं, हिंसा और आतंक के प्रेमी हैं, उन्हें अकेले बैठना ही पड़ेगा।

सम्पादकीय

बढ़ते खतरे से लड़कर जीतेंगे हम

कोविड-19 दुनिया को एक नया अनुभव देने वाली महामारी साबित हुई है। इसका पहला मामला पिछले साल के आखिरी हफ्तों में वुहान में दर्ज किया गया था, और अब तक बीते आठ महीनों में देश-दुनिया में इसके कई हॉटस्पॉट बन गए हैं। चीन से निकलकर यह वायरस यूरोप पहुंचा, और अब एशियाई देशों में इसका संक्रमण शीर्ष पर पहुंचता दिख रहा है। भारत इससे खासतौर से प्रभावित है। रोजाना नए मामलों के लिहाज से हम सबसे ऊपर तो हैं ही, संक्रमित मरीजों की संख्या के हिसाब से भी हम शीर्ष देशों में शामिल हैं। हालांकि, ठीक होने वाले मरीजों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है और रिकवरी रेट 70 फीसदी से अधिक हो चुकी है। वैक्सीन के तीसरे चरण का परीक्षण भी बस शुरू होने वाला है। तो क्या कोरोना वायरस के दिन जल्द ही लदने वाले हैं? इसका जवाब तलाशने से पहले यह जानना जरूरी है कि अब तक हमने इसका किस तरह मुकाबला किया है? अपने यहां मई तक संक्रमित मरीजों की संख्या बहुत ज्यादा नहीं थी। कहा जाता है कि लॉकडाउन के खुलने के बाद मामले तेजी से बढ़ने लगे। हालांकि, यहां मृत्यु-दर हमेशा से कम रही है। शुरुआती दिनों में यह बेशक पांच फीसदी के आसपास थी, लेकिन अब यह घटकर दो प्रतिशत से भी नीचे आ गई है। इसकी तुलना अगर टीबी से मरने वाले मरीजों या बाल मृत्यु-दर से करते हैं, तो काफी उम्मीदें बंधती हैं। टीबी से होने वाली कुल वैश्विक मौत की दो-तिहाई अकेले अपने यहां होती है, जबकि बाल मृत्यु-दर में भी हमारी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। इतना ही नहीं, कोरोना वायरस में मृत्यु-दर सामान्य वायरस जैसी ही है। तब क्यों इसको लेकर पूरे देश में यूं अफरा-तफरी का माहौल पैदा हो गया? दरअसल, दो वजहों से इस वायरस को लेकर डर फैला। एक, संक्रमित करने की इसकी तेज क्षमता और दूसरी, हमारे यहां स्वास्थ्य-सेवाओं की खस्ता हालत। बेशक, संक्रमित करने की इसकी ताकत दूसरे वायरसों से ज्यादा है, लेकिन आम लोग में डर का सबसे बड़ा कारण रहा, हमारा दरकता स्वास्थ्य ढांचा। आज भी भारत में कुल जीडीपी का 1.17 फीसदी हिस्सा ही स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतरी पर खर्च किया जाता है। नतीजतन, कोरोना संक्रमण का प्रसार होते ही अस्पताल मरीजों के बढ़ते बोझ से चरमराने लगे। यह स्थिति अब तक सुधरती नहीं दिख रही, जबकि हर वायरल संक्रमण का अपना चक्र होता है और संक्रमण के शिकार हरेक मरीज को अस्पताल जाने की जरूरत नहीं पड़ती। यहां कहने का आशय यह नहीं है कि कोरोना वायरस हमारे लिए कोई चुनौती नहीं है। बेशक हमें इससे मजबूती से लड़ना है, लेकिन डर का बनता माहौल खतरनाक है। जरूरत आम लोगों में विश्वास बढ़ाने की है, लेकिन भरोसा जगना तो दूर, सरकार के राहत उपायों से खौफ ही अधिक बढ़ता दिखा। मसलन, ऐसी खबरें आईं कि गुणवत्तापूर्ण पीपीई किट (निजी सुरक्षा उपकरण) वरिष्ठ डॉक्टरों को दिए गए, जबकि जूनियर डॉक्टरों या अन्य स्वास्थ्यकर्मियों को अपेक्षाकृत कम गुणवत्ता के उपकरण मिले। उनके काम के घंटों को लेकर भी सवाल उठा, क्योंकि इस किट को लंबे समय तक पहनना एक मुश्किल चुनौती है। इसका अर्थ है कि सरकारों ने कोरोना संक्रमण को थामने के उपाय तो किए, लेकिन लोगों तक सही संदेश पहुंचाने में वे बुरी तरह विफल रहीं। इसी कारण बाजार से सैनिटाइजर और एन-95 मास्क जैसी अनिवार्य वस्तुओं की किल्लत हो गई, और कुछ लोगों ने बिना डॉक्टरी सलाह के फिजूल की दवाइयां निगल लीं।अच्छी बात है कि अब रिकवरी रेट पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा है। यानी, अब मीडिया माध्यमों से सिर्फ संक्रमित मरीजों की संख्या या नए संक्रमण की जानकारी नहीं दी जाती, बल्कि इससे ठीक होने वाले लोगों का जिक्र भी किया जाता है। यह एक अच्छी नीति है। इससे लोगों में भरोसा जगने लगा है कि कोरोना कोई ऐसी बीमारी नहीं, जो सिर्फ उनकी जान ले। इसके मरीज ठीक भी हो सकते हैं। छींकने या खांसते वक्त मुंह ढकने और साफ-सफाई पर विशेष ध्यान रखने जैसे निर्देशों को भी लोगों के सामने इसी तरह पेश करना चाहिए, ताकि उनका डर कम हो। वैसे भी, इस तरह के व्यवहार आमतौर पर बचपन में ही हमें सीखा दिए जाते हैं। हां, अब इस पर गंभीरता से अमल करने की जरूरत है। अनिश्चितता के माहौल को खत्म करना भी जरूरी है। जैसे, एक निजी अध्ययन में मैंने पाया कि कोरोना-हेल्पलाइन नंबर बमुश्किल से काम करते हैं। अव्वल तो यह नंबर उठता नहीं, और अगर कोई उठाता भी है, तो उचित सलाह देने का भरोसा देकर फोन रख देता है। इसी तरह, कुछ राज्य सरकारों ने ऐसी वेबसाइट लॉन्च की, जहां अस्पतालों के खाली बेड की जानकारी ली जा सकती है, लेकिन मुश्किल यह है कि जब तक सूचनाएं वेबसाइट पर दर्ज होती हैं, तस्वीर बदल चुकी होती है, यानी वेबसाइट पर तो अस्पतालों में खाली बेड दिखते हैं, पर असलियत में वे भर चुके होते हैं। इन सबसे भविष्य को लेकर लोगों के मन में कई दुश्चिंताएं पनपीं। बेशक समस्याएं हैं, पर उनके हल की तरफ कदम बढ़ाने की जरूरत है, न कि मुश्किलों को और गहरा बनाने की। अपने यहां जनवरी के अंत में पहला मामला सामने आया था। बीते छह महीने से अधिक का वक्त गुजर गया है, लेकिन हम यह तय नहीं कर सके कि वायरस किस रूप में आगे बढ़ेगा? हॉटस्पॉट पर ही इसके संक्रमण को रोकने की दरकार थी, जिसमें हम सफल नहीं हो सके। इसीलिए चुनौती अब कहीं ज्यादा गहरी हो गई है।बहरहाल, उम्मीद बनी हुई है। कोरोना से जंग हम जीत सकते हैं। इसका चरित्र आम वायरस से बहुत अलग नहीं है, इसलिए इसे लेकर नीतियां भी उसी अनुरूप बननी चाहिए। सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देश उन तबकों के हित में ज्यादा हों, जिन्हें अपना पेट पालने के लिए रोजाना घर से बाहर निकलना पड़ता है।

मोदी की रणनीति समझने में नाकाम विरोधी

बात पाकिस्तान की हो, चीन की, या घरेलू राजनीति की, मोदी कभी जल्दबाजी में नजर नहीं आते। वहीं विरोधियों की हड़बड़ी सदैव उनके काम आती!

मानव इतिहास में वैसे तो बहुत से दार्शनिक हुए हैं, पर दो नाम हैं जिनका लिखा सदियों बाद आज भी उतना ही प्रासंगिक है। चाणक्य का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। इसी तरह चीन के दार्शनिक शुन जू की किताब श्आर्ट ऑफ वॉर दुनिया भर में सैनिक अकादमियों और व्यापार प्रबंधन संस्थानों में पढ़ाई जाती है। इन दोनों का जिक्र करने का संदर्भ यह है कि हमारे मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कार्यशैली पर इनका अच्छा-खासा प्रभाव दिखता है। उनकी राजनीति ही नहीं, शासन कौशल पर भी इनका प्रभाव नजर आता है। चाणक्य का जिक्र पहले भी हो चुका है, इसलिए आज शुन जू की बात करते हैं। उनकी किताब बहुत छोटी-सी है। उसमें 13 चौप्टर हैं और 50 सूत्र। उनके चार खास सूत्रों के परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्री मोदी की कार्यशैली का विश्लेषण अहम है। पहला सूत्र- अचरज में डालने की योजना बनाओ। दूसरा सूत्र- खुद को और अपने दुश्मन को जानो। तीसरा सूत्र- सकारात्मक तत्वोंध्कारकों को साथ लेकर चलो और चौथा सूत्र- समय को अपना साथी बनाओ। अचरज में डालने की रणनीति प्रधानमंत्री मोदी का सहज स्वभाव बन गई है। पिछले छह सालों में उन्होंने बहुत से बड़े फैसले लिए, जिन्होंने लोगों को चौंकाया। शुन जू के मुताबिक इस नीति पर चलकर जो कामयाबी मिलती है, वह उसके लिए किए गए प्रयास से बहुत ज्यादा होती है। प्रधानमंत्री मोदी के इसी कार्यकाल के दो उदाहरण हैं। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 कभी हट भी सकता है, यह कल्पनातीत हो गया था। ऐसा कोई प्रस्ताव दो दिन में संसद के दोनों सदनों से दो तिहाई बहुमत से पारित हो सकता है, यह तो असंभव ही था। लेकिन पांच अगस्त, 2019 को यह असंभव इतनी तेजी से संभव हुआ कि विरोधियों को संभलने का मौका ही नहीं मिला। यह देखने के बाद भी चीन के राष्ट्रपति ने कोई सबक नहीं सीखा। लेह-लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीनी सेना वहां तक आ गई, जहां उसे नहीं आना चाहिए था। शी चिनफिंग ने अपने ही देश के दार्शनिक की सीख को नजरअंदाज किया।

शुन जू का दूसरा सूत्र है कि खुद के साथ अपने दुश्मन को समझ लो तो सौ लड़ाइयां भी नहीं हारोगे। पहले तो चिनफिंग यह भूल गए कि मोदी चौंकाते हैं। पिछले 73 सालों से चीन ऐसी हरकतें करता रहा है, पर भारत ने कभी (1962 के युद्ध को छोड़कर) अपनी सेना का भारी जमावड़ा वास्तविक नियंत्रण रेखा पर नहीं किया। डोकलाम के समय भी भारत ने ऐसा नहीं किया था। चीन इसी मुगालते में था कि इस बार भी वैसा ही होगा। भारतीय सेना की तैनाती ऐसी है, जैसी पूर्ण युद्ध के लिए होनी चाहिए। यह चीन की दूसरी गलती थी। वह अपने दुश्मन यानी भारत को समझ नहीं पाया। शुन जू ने कहा था कि अगर अपने को जानते हो और अपने दुश्मन को नहीं तो लड़ाई बराबरी पर छूटेगी। यदि दोनों को नहीं समझे तो हार तय है। गलवन में भारतीय फौज ने जिस तरह चीन को जवाब दिया, उससे साफ है कि उसने अपने फौजियों की क्षमता

समझने में भूल की।

चीन को अचरज का सामना केवल सीमा पर ही नहीं करना पड़ा। आर्थिक मोर्चे पर भी उसे भौचक्का होना पड़ा। चीन से आयात पर हमारी निर्भरता और व्यापार के परिमाण को देखते हुए वह निश्चिंत था कि भारत को मजबूरन व्यापार के मोर्चे पर यथास्थिति बनाए रखनी पड़ेगी। चीनी एप्स पर प्रतिबंध से चीनी कंपनियों पर एक के बाद एक वार का सिलसिला अभी रुका नहीं है। श्मेक इन इंडिया देश के लिए था। श्आत्मनिर्भर भारत उसी का विस्तार है, पर मेक फॉर वर्ल्ड की नीति का ऐलान चीन का यह गुरूर तोड़ने के लिए है कि वह दुनिया का मैन्युफैक्चरिंग हब है। प्रधानमंत्री ने दुनिया के देशों को कहा कि आइए, भारत में निवेश कीजिए। हमारे यहां जनतंत्र है और हम ज्यादा भरोसेमंद हैं। निशाने पर चीन ही है। शुन जू का तीसरा मंत्र है सकारात्मक तत्वोंध्कारकों को साथ रखो। भारत सरहद पर और आर्थिक क्षेत्र में चीन पर दबाव बनाने तक ही सीमित नहीं रहा। अमेरिका आज खुले तौर पर साथ है तो जापान, ऑस्ट्रेलिया, इजरायल और खाड़ी के देशों को भी साधने में मोदी की कूटनीति सफल रही है। रूस जो पिछले कुछ समय से चीन के करीब आ गया था, उसने भारत के प्रभाव में चीन को एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम की आपूर्ति रोक दी, पर भारत को तय समय पर देने का वादा किया। चीन ने भारत का नाम लिए बिना कहा भी कि हमें पता है कि यह किसी के दबाव में किया गया है। भारत के कूटनीतिक प्रयासों और चीन की विस्तारवादी नीति ने दुनिया के तमाम देशों को चीन के खिलाफ कर दिया है। वह दक्षिण चीन सागर में भी घिर ही नहीं रहा, बल्कि अलग-थलग भी पड़ गया है। चौथा सूत्र है- समय को अपना साथी बनाओ। बात चीन की हो, पाकिस्तान की हो या घरेलू राजनीति की, मोदी कभी जल्दबाजी में नजर नहीं आते। इसके उलट उनके विरोधियों की जल्दबाजी हमेशा उनके काम आती है। मोदी आलोचना के डर से न तो फैसले करते हैं और न ही बदलते हैं। कारण यह है कि उनकी नजर इस पर रहती है कि आलोचना करने वाले कौन हैं और किस मकसद से कर रहे हैं? लोकतंत्र में शासक को आलोचना न केवल सुननी चाहिए, बल्कि उसका स्वागत भी करना चाहिए। इसके साथ ही लोकतंत्र में नेता का हाथ यदि जनता की नब्ज पर हो तो उसे पता रहता है कि कौन-सी आलोचना दिशा-दशा सुधारने के लिए है और कौन-सी दिग्भ्रमित करने के लिए। यही कारण है कि बात चीन से सीमा विवाद की हो, कोरोना के खिलाफ लड़ाई की या देश की आर्थिक स्थिति की, प्रधानमंत्री कुछ नेताओं और लिबरल ब्रिगेड की आलोचनाओं, हमलों का जवाब देने में नहीं उलझे। इसका कारण यह है कि उन्हें देश के लोगों पर विश्वास है और देश के लोगों को उन पर। शुन जू ने एक बात और कही है, जो युद्ध रणनीति के साथ राजनीति पर भी खरी उतरती है। जिस नेतृत्व का एकमात्र लक्ष्य अपने लोगों की सुरक्षा और देशहित हो, वह उस देश का बहुमूल्य रत्न होता है। मोदी की राजनीति और शासन कौशल के हर पहलू में देशहित पहली और अंतिम कसौटी होती है। यही गुण उन्हें दूसरे दलों के नेताओं से ही नहीं, अपनी पार्टी के नेताओं से भी अलग करता है।

शहरों की बिगड़ती सूरत

शहरों का सही ढंग से विकास तब तक संभव नहीं, जब तक नियोजित विकास के लिए जिम्मेदार लोगों को कड़वी गोली नहीं दी जाती। आत्मनिर्भर भारत को लेकर भारतीय उद्योग परिसंघ की ओर से आयोजित एक वेबिनार में केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने यह अनुमान व्यक्त किया कि 2030 तक देश की 40 प्रतिशत आबादी शहरों में रहने लगेगी और इसके लिए हर वर्ष लाखों वर्गमीटर जमीन की जरूरत पड़ेगी। स्पष्ट है कि इसके लिए शहरों के आसपास की जमीन का अधिग्रहण करना पड़ेगा। इसके साथ ही शहरों के आधारभूत ढांचे का विकास भी करना पड़ेगा। यह ध्यान रहे कि हमारे शहरों का आधारभूत ढांचा जर्जर होता जा रहा है। इस कारण शहरी आबादी को तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। शहरों की समस्याएं इसलिए भी बढ़ रही हैं, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन रोकना लगभग नामुमकिन है। हालांकि राज्यों की ओर से ग्रामीण इलाकों में रोजगार के अवसर पैदा करने की कोशिश की जा रही है, लेकिन अभी तो वह अपर्याप्त ही दिखती है। इतिहास बताता है कि दुनिया भर के देशों की तरक्की के मुख्य माध्यम उनके शहर ही बने हैं। यही कारण है कि विकसित देशों की अर्थव्यवस्था में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का हिस्सा पांच-सात प्रतिशत से अधिक नहीं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के केवल कृषि पर आधारित होने के कारण उसकी अपनी सीमाएं हैं। इन सीमाओं को समझा जाना चाहिए, क्योंकि भारत सरीखे देशों में कृषि पर निर्भर आबादी की संख्या बहुत अधिक है।

अपने देश में बरसात के दिनों में शहरों के आधारभूत ढांचे की पोल पूरी तरह खुल जाती है। शायद ही कोई शहर हो जो बारिश के बाद जलभराव और गंदगी से पटा न दिखता हो। शहरी ढांचे के जर्जर होने का एक प्रमुख कारण यह है कि उनके विकास प्राधिकरण और नगर निगम दूरगामी दृष्टि रखते हुए आधारभूत ढांचे का निर्माण करने और उसकी गुणवत्ता बनाए रखने में नाकाम हैं। अक्सर शहरों में नया बना आधारभूत ढांचा पांच-छह साल बाद ही बढ़ती जनसंख्या के कारण नाकाफी लगने लगता है। आखिर इसका क्या मतलब कि हर 10-15 साल बाद आधारभूत ढांचे के निर्माण में धन व्यय करना पड़े? इस निर्माण के दौरान जो तोड़फोड़ होती है, उससे लोगों को भारी परेशानी उठानी पड़ती है। परेशानी का यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होता, क्योंकि कुछ न कुछ बनता ही रहता है। चूंकि जो गांव और ग्रामीण क्षेत्र शहरों का हिस्सा बन जाते हैं, वहां के आधारभूत ढांचे को सुधारने की कोई पहल नहीं की जाती इसलिए वहां अनियंत्रित निर्माण होता रहता है। इन गांवों की अधिग्रहीत और गैर-अधिग्रहीत जमीनों पर बेतरतीब निर्माण कार्य भी जमकर होते हैं और अतिक्रमण एवं अवैध कब्जे भी। इसी कारण वहां जनसंख्या घनत्व तेजी से बढ़ता जाता है और फिर वह आसपास के इलाकों के आधारभूत ढांचे को अपनी चपेट में लेकर उसे ध्वस्त करने लगता है। ऐसे इलाके गंदगी, अतिक्रमण, ट्रैफिक जाम, प्रदूषण से जूझने लगते हैं। धीरे-धीरे वे बीमारियां फैलाने की जड़ बन जाते हैं। कोविड महामारी के दौरान यह सामने आया कि अत्यधिक घनी आबादी वाले इलाकों में कोरोना वायरस का संक्रमण कहीं तेजी से फैला। गांवों से पलायन करके आने वाले अधिकांश कामगार शहर के गांवों या फिर उनके आसपास बसी अनियोजित कॉलोनियों में आकर ही रहते हैं। ऐसे इलाकों में आबादी का घनत्व रोकने के लिए न तो शहरी विकास से जुड़ी एजेंसियां सतर्क होती हैं और न ही राज्य सरकारें। उलटे राजनीतिक संरक्षण के कारण इन क्षेत्रों में होने वाले अनियोजित निर्माण पर कोई रोक भी नहीं लगती। नतीजा यह होता है कि ऐसे इलाके रहने लायक नहीं रह जाते। होना तो यह चाहिए कि चाहे अधिकृत क्षेत्र हों या अनधिकृत, उनमें लगभग एक समान मापदंड से विकास होना चाहिए। इससे किसी एक क्षेत्र में जरूरत से ज्यादा आबादी की बसाहट को रोका जा सकता है। शहरों के नियोजित विकास का भार जिन शहरी निकायों पर है, उन्हें सक्षम और जवाबदेह बनाने में राज्य सरकारों के अलावा सभासदों, मेयरों और विधायकों की भी जिम्मेदारी है, लेकिन इस मामले में उनका योगदान मुश्किल से देखने को मिलता है। इसी कारण शहरी निकाय अव्यवस्था एवं भ्रष्टाचार के अड्डे बनकर रह गए हैं। इन निकायों में जनता का शायद ही कोई काम बिना लेन-देन होता हो। वैध काम के लिए भी रिश्वत देनी पड़ती है। सभासद से लेकर मेयर और विधायक तक इस भ्रष्टाचार से बेपरवाह होकर इसमें जुटे रहते हैं कि उनके मन मुताबिक काम कैसे हो या फिर न हो? उनकी मुख्य चिंता अपने वोट बैंक को प्रश्रय देने की होती है, भले ही वह अनियोजित कॉलोनियों और झुग्गी बस्तियों में बसा हो। शहरों की अनियोजित कॉलोनियों का सही ढंग से विकास तब तक संभव नहीं, जब तक नियोजित विकास के लिए जिम्मेदार लोगों और खासकर सभासदों, मेयर और विधायकों को कोई कड़वी गोली नहीं दी जाती। शहरों के नियोजित विकास हेतु जनप्रतिनिधियों की जबावदेही तय करने के लिए कोई ऐसा तंत्र विकसित होना ही चाहिए, ताकि उनके कामकाज का सतत आकलन हो सके। यह आकलन इस तरह होना चाहिए कि जनप्रतिनिधि और खासकर सभासद एवं मेयर इसे लेकर चिंतित रहें कि यदि जनता उनके कामकाज से नाखुश हुई तो उन्हें हाशिये पर जाना पड़ सकता है या फिर उनके अधिकारों में कटौती हो सकती है। अभी ऐसी कोई व्यवस्था नहीं इसलिए मनमानी होती रहती है और उसके चलते हमारे शहर दुर्दशा से दो-चार होते रहते हैं। पिछले कई दशकों से केंद्र सरकारें शहरी विकास की तमाम योजनाएं लेकर आई हैं। इन योजनाओं के तहत राज्यों को खासा धन मुहैया कराया गया, लेकिन शायद ही कोई योजना ढंग से परवान चढ़ पाई हो। केंद्र के धन से कुछ शहरों में आधारभूत ढांचे जरूर खड़े किए गए, लेकिन वे शहर विशेष की सूरत बदल पाने में सक्षम नहीं हुए। इस समय देश के कई शहरों में मेट्रो का निर्माण हो रहा है, लेकिन यह कहना कठिन है कि अकेले मेट्रो के निर्माण से शहरी विकास नियोजित होने लगा है। फ्लाईओवर, मेट्रो आदि के निर्माण को इंगित कर अपनी पीठ ठोंकने वाले नेता और नौकरशाह यह देखने को तैयार नहीं कि विकसित और यहां तक कि कुछ विकासशील देशों ने अपने शहरों का विकास किस तरह किया है। आज देश का कोई भी बड़ा शहर विश्व के विकसित देशों के शहरों जैसा नहीं दिखता। पड़ोसी देश चीन का शहरी विकास देखकर हमारे उन नीति-नियंताओं को शर्मिंदा होना चाहिए, जो मुंबई को शंघाई या फिर कोलकाता को लंदन जैसा बनाने के वादे करते रहे हैं। यदि हमारे शहरों की सूरत नहीं संवर रही तो इसके लिए धन का अभाव कम, राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी अधिक जिम्मेदार है।

सार समाचार .....

ओलंपिक व पैरालंपिक्स क्वालीफाई करने पर तैयारी के लिए 5 लाख का एडवांस

चंडीगढ़ एजेंसी। हरियाणा सरकार ने शनिवार को खिलाड़ियों के संबंध में एक अहम फैसला लिया है। प्रदेश में ओलंपिक व पैरालंपिक्स खेलों में क्वालीफाई होने वाले खिलाड़ियों को पूर्व तैयारी के लिए पांच लाख रुपए की प्रोत्साहन राशि एडवांस दी जाएगी। खेलकूद विभाग के इस प्रस्ताव को मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने मंजूरी दे दी है। खेल एवं युवा मामले राज्यमंत्री संदीप सिंह ने शनिवार को यहां कहा कि 2021 में होने वाले ओलंपिक की तैयारी कर रहे खिलाड़ियों में सरकार के इस फैसले से खासा उत्साह है। संदीप सिंह ने कहा कि इससे पहले ओलंपिक व पैरालंपिक्स खेलने के बाद खिलाड़ियों को 15 लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि सरकार द्वारा दी जाती थी। ओलंपिक व पैरालंपिक्स की तैयारी कर रहे खिलाड़ियों को प्रोत्साहन राशि की तैयारी के समय बेहद जरूरत होती है। ऐसे समय में खिलाड़ी को डाइट व अन्य कई तरह के सामान की जरूरत होती है। इस पर काफी खर्च आता है। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों की इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने खेल विभाग की मांग पर ओलंपिक व पैरालंपिक्स में क्वालीफाई करने वाले खिलाड़ियों को पांच लाख रुपये एडवांस प्रोत्साहन राशि के रूप में देने की योजना को स्वीकृति दी है, जबकि बकाया राशि उन्हें ओलंपिक खेलने के बाद उपलब्ध करवाई जाएगी।

मुझे अवार्ड क्यों नहीं ओलंपिक मेडलिस्ट साक्षी के पीएम-खेल मंत्री से सवाल

नई दिल्ली एजेंसी। रियो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता और खेल के सर्वोच्च पुरस्कार राजीव गांधी खेल रत्न से सम्मानित हो चुकीं भारतीय महिला पहलवान साक्षी मलिक ने अर्जुन अवार्ड नहीं मिलने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय खेल मंत्री किरेन रिजिजू को पत्र लिख कर अपनी नाराजगी व्यक्त की है। खेल मंत्रालय ने शुक्रवार को अर्जुन पुरस्कार विजेताओं के नामों की घोषणा की थी, जिसमें महिला पहलवान साक्षी और भारोत्तोलन विश्व चैंपियन मीराबाई चानू का नाम हटा दिया गया था। इस पर साक्षी ने अपनी नाराजगी व्यक्त की है। खेल मंत्रालय ने हालांकि इन दोनों के नाम शामिल नहीं करने पर कहा था कि इन लोगों को क्रमशः 2016 तथा 2018 में खेल रत्न मिल चुका है, इसलिए इन्हें अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित नहीं किया जा रहा है।

27 वर्षीय साक्षी ने पत्र में लिखा है कि हर एथलीट का सपना होता है कि वह अपने नाम के आगे ज्यादा से ज्यादा पदक हासिल करे। साक्षी ने प्रधानमंत्री और खेल मंत्री से पूछा कि वह अब कौन सा पदक जीतें, जिससे उन्हें अर्जुन पुरस्कार दिया जाए और क्या उनके कुश्ती करियर में उन्हें कभी इस सम्मान से नवाजा भी जाएगा।

कैमरन व्हाइट का

इंग्लैंड के 583 के जवाब में पाकिस्तान 24/3 तीसरे दिन दबाव में रहेगी अजहर अली की टीम

- इंग्लैंड के लिए जेम्स एंडरसन ने सभी तीनों विकेल लिए, बाबर आजम भी आउट हो चुके हैं
- तीसरे दिन लंच तक का खेल अहम रहेगा, इंग्लैंड पहली पारी में भारी बढ़त ले सकता है

दिल्ली | एजेंसी।

इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच तीन टेस्ट की सीरीज का आखिरी मैच साउथैंप्टन के रोज बाउल स्टेडियम में खेला जा रहा है। आज तीसरा दिन है। पहले दो दिन इंग्लैंड की टीम हावी रही। उसने पहले 583 रन का विशाल स्कोर बनाया। इसके बाद करीब 40 मिनट के खेल में 3 विकेट लेकर पाकिस्तान को बैकफुट पर धकेल दिया। आउट ऑफ फॉर्म चल रहे अजहर अली क्रीज पर हैं। लेकिन, बाबर आजम आउट हो चुके हैं।

रोज बाउल पर दूसरे दिन का आखिरी घंटा एंडरसन के नाम रहा। पाकिस्तान के तीनों विकेट एंडरसन ने ही लिए। उन्होंने सबसे पहले शान मसूद को 4 रन पर जेम्स एंडरसन ने एलबीडब्ल्यू किया। इसके बाद आबिद अली (1) को डॉम सिबली के हाथों कैच आउट कराया। तीसरे विकेट के तौर पर बाबर आजम (11) को एलबीडब्ल्यू किया। स्विंग के साथ ही रफ्तार ने पाकिस्तानी बल्लेबाजों को मुश्किल में डाल दिया।

फिलहाल, सीरीज में इंग्लैंड ने 1-0 की बढ़त बनाए रखी है। इंग्लिश टीम ने पहले मैच में पाकिस्तान को 3 विकेट से हराया था। वहीं, दूसरा मैच बारिश के कारण ड्रॉ हो गया था। इंग्लैंड यह तीसरा मैच जीतकर 2-0 से सीरीज जीतना चाहेगा, जबकि पाकिस्तान की कोशिश मैच जीतकर सीरीज 1-1 से बराबर करने की रहेगी।

पाकिस्तान- अजहर अली (कप्तान), बाबर आजम (उपकप्तान), आबिद अली, शान मसूद, असद शफीक, फवाद आलम, मोहम्मद रिजवान, यासिर शाह, मोहम्मद अब्बास, शाहीन अफरीदी और नसीम शाह।

इंग्लैंड- रोरी बर्न्स, डॉम सिबली, जैक क्राउली, जो रूट (कप्तान), जोस बटलर, ओली पोप, क्रिस वोक्स, डॉम बेस, जोफ्रा

आरसीबी टीम के साथ दुबई क्यों नहीं गए विराट कोहली

नई दिल्ली | एजेंसी।

इंडियन प्रीमियर लीग के 13वें सीजन का आयोजन इस बार विदेशी धरती पर होने जा रहा है. इसके लिए आईपीएल टीमों का संयुक्त अरब अमीरात पहुंचना शुरू भी हो गया है. रॉयल चैलेंजर्स बैंगलौर की टीम भी 21 अगस्त को दुबई की धरती पर एक विशेष विमान से लैंड कर गई, लेकिन टीम के साथ कप्तान विराट कोहली की गैरमौजूदगी ने अटकलों का दौर शुरू कर दिया. बैंगलौर मिरर अखबार की खबर के मुताबिक, विराट ने दुबई के लिए किराये पर अलग विमान लिया था और उसमें ही वे वहां के लिए रवाना हुए. इससे पहले उन्होंने मुंबई में अपने घर पर ही क्वारंटीन की प्रक्रिया पूरी की और टीम ने उनका कोविड टेस्ट भी वहीं पर कराया था. इस तरह आरसीबी की बाकी टीम बंगलूरू से तो विराट कोहली उसी समय मुंबई से दुबई के लिए रवाना हुए थे. किसी ने विराट के बाद में पहुंचने की बात कही, तो किसी ने उनकी अभिनेत्री पत्नी अनुष्का शर्मा की तबीयत खराब होने का ही अंदाजा लगा लिया. ये अटकलें बाद में तब शांत हुई, जब आरसीबी ने अपने ट्विटर हैंडल से विराट के एक ट्वीट को रिट्वीट करते हुए उनके पहले से ही दुबई में मौजूद होने की जानकारी दी. लेकिन अब एक नया राज सामने आया है. यह राज है विराट के भी 21 अगस्त को ही दुबई टीम से अलग दूसरे विमान से पहुंचने का. विराट के इस तरह अलग से आने का क्या कारण है, इसका भी राज खुल गया है. दरअसल आरसीबी का बेस उनके घरेलू शहर बेंगलुरु में बना हुआ है. इस कारण टीम के सभी भारतीय खिलाड़ियों को बेंगलुरु पहुंचने के लिए ही कहा गया था. बेंगलुरु पहुंचने के बाद इन सभी क्रिकेटर्स को पिछले डेढ़ सप्ताह से क्वारंटीन किया गया था. इस दौरान टीम के सभी खिलाड़ियों के तीन बार कोविड-19 टेस्ट किए गए. इनकी रिपोर्ट निगेटिव मिलने के बाद ही क्रिकेटर्स को हवाई जहाज में सफर करने का मौका दिया गया।

सुधीर सक्सेना बने आरम्भ अकादमी ऑफ मार्शल आर्ट्स की नई दिल्ली इकाई के प्रभारी

नयी दिल्ली , एजेंसी। लगभग 20 वर्षों से मार्शल आर्ट्स के क्षेत्र में खुद को एक शानदार खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर चुके सुधीर सक्सेना को आरम्भ अकादमी ऑफ मार्शल आर्ट्स (सम्बद्ध ओकिनावा कोशिकी गोजू रियू कराते डू शिरेनकान इंडिया) की नई दिल्ली इकाई का प्रभारी बनाया गया है। सुधीर सक्सेना को प्रभारी बनाए जाने पर संस्था के सभी प्रशिक्षक, संस्था के संस्थापक सेंसेई अजित कुमार श्रीवास्तव और संस्था के संरक्षक, अभिभावक एवं मार्गदर्शक सेंसेई डी बी राय ने शुभकामनाएं दी हैं। यह जानकारी आरम्भ अकादमी ऑफ मार्शल आर्ट्स इंडिया के मुख्य प्रशिक्षक सेंसेई अजित कुमार श्रीवास्तव ने दी। उन्होंने बताया कि सुधीर ने लगभग 20 वर्षों से मार्शल आर्ट के क्षेत्र में अपने परिश्रम के बल पर खुद को एक अच्छे खिलाड़ी के रूप में प्रतिस्थापित किया है। उन्होंने बताया कि मिशन शक्ति सेना का गठन भी सुधीर की देख रेख में दिल्ली में प्रारम्भ किया जा रहा है। यह सिर्फ प्रदेश स्तर पर ही नहीं बल्कि देश के स्तर पर भी शक्ति सेना का परचम फैलाने के लिए संकल्पित है जहां बालिकाएं एवं महिलाएं मार्शल आर्ट्स की विधाओं में प्रशिक्षित हो और खुद को सशक्त बनाएं। साथ ही एकेडमी द्वारा प्रशिक्षित प्रशिक्षुओं को रोजगार के लिए पूरे देश में एक अभियान की भी विशेष योजना बनायी गयी है,जिससे प्रत्येक मार्शल आर्टिस्ट् को स्वरोजगार की व्यवस्था हो और वह आत्मनिर्भर बन सके। प्रदेश के प्रत्येक जिलों में आत्मरक्षा केन्द्र खोलने की भी योजना पर कार्य किया जाएगा। सुधीर को इस दायित्व के सकुशल निर्वहन के लिए मार्शल आर्ट्स प्रशिक्षकों के साथ अखिलेश रावत, दीप अगस्ति, डॉ कुंवर साहनी, प्रमोद कुमार सिंह ने बधाई दी।

जब डेविड वॉर्नर और जॉनी बेयरस्टो ने की धमाकेदार ओपनिंग पार्टनरशिप

एजेंसी। आईपीएल के इन 12 सालों में कई बेहतरीन और रोमांचक मुकाबले को देखने को मिले हैं. इन शानदार मैचों में आईपीएल इतिहास के कई बड़े रिकॉर्ड बने और टूटे हैं. लेकिन कुछ मुकाबले ऐसे भी रहे हैं, जिनके बारे में जितनी बार चर्चा की जाए उतना कम लगता है. जी हां ऐसा ही एक मुकाबला आईपीएल 2019 के दौरान खेला गया था, जब सनराइजर्स हैदराबाद के सलामी बल्लेबाज जॉनी बेयरस्टो और डेविड वॉर्नर ने आईपीएल की रिकॉर्ड बुक को तहस-नहस कर डाला. बेयरस्टो और वॉर्नर ने उस मैच में धमाकेदार खेल का उम्दा प्रदर्शन कर आईपीएल की सबसे बड़ी रिकॉर्ड 185 रनों की ओपनिंग साझेदारी बना दी थी. सनराइजर्स हैदराबाद और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलौर के बीच आईपीएल 12 के दौरान हैदराबाद के राजीव गांधी इंटरनेशनल मैदान पर एक ऐतिहासिक मुकाबला खेला गया. इस मैच में आरसीबी के कप्तान विराट कोहली से बस एक गलती हो गई जो उन्होंने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी. उसके बाद सनराइजर्स हैदराबाद के दो सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर और जॉनी बेयरस्टो ने अपने दम पर आरसीबी को मैच में खदेड़ दिया. बेयरस्टो और वार्नर की जोड़ी ने बैंगलौर के गेंदबाजों की जमकर धुनाई लगाई. मैच के दौरान मैदान के चारों ओर इतने चौके और छक्के लग रहे थे कि मानो किसी पुराने मैच का हाईलाइलट्स चल रहा हो. डेविड वार्नर और जॉनी बेयरस्टो ने इस मैच में आईपीएल इतिहास की सबसे बड़ी रिकॉर्ड ओपनिंग पार्टनरशिप बनाई।

सौरव गांगुली ने जैक क्रॉले की जमकर की तारीफ

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष और पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने इंग्लैंड के बल्लेबाज जैक क्रॉले की तारीफ के पुल बांधते हुए इस युवा को बेहतरीन खिलाड़ी करार दिया, जिन्होंने साउथम्पटन में पाकिस्तान के खिलाफ तीसरे टेस्ट में 267 रन की शानदार पारी खेली। गांगुली ने साथ ही उम्मीद जताई कि क्रॉले को तीनों फॉर्मेट में खेलने का मौका मिलेगा। क्रॉले ने अपने आठवें टेस्ट मैच में शनिवार को जोस बटलर (152 रन) के साथ रिकॉर्ड साझेदारी के दौरान दोहरा शतक जमाया। इससे इंग्लैंड की टीम पाकिस्तान पर टेस्ट सीरीज जीतने के करीब पहुंच गई है। 22 साल के क्रॉले की 392 गेंद की इस पारी ने उन्हें इंग्लैंड के खिलाड़ियों के ऑलटाइम टॉप स्कोर में 10वें स्थान पर पहुंचा दिया। गांगुली ने ट्वीट किया, इंग्लैंड को तीसरे नंबर पर क्रॉले के रूप में बहुत अच्छा खिलाड़ी मिल गया है। उन्होंने कहा, वह बेहतरीन खिलाड़ी दिखता है। उन्हें नियमित रूप से सभी फॉर्मेट में खेलते हुए देखने की उम्मीद करूंगा। गांगुली ने अपने ट्वीट में नासिर हुसैन को भी टैग किया। बेन स्टोक्स पारिवारिक कारणों से अपने देश न्यूजीलैंड लौट गए हैं, जिससे उन्हें तीसरे और अंतिम टेस्ट में खेलने का मौका मिला। क्रॉले ने भी इस मौके का फायदा उठाकर दोहरे शतक से इंग्लैंड की टीम में तीसरे नंबर के नियमित बल्लेबाज के लिए दावा पेश कर दिया है। उनकी बटलर के साथ पांचवें विकेट के लिये 359 रन की साझेदारी टेस्ट में इंग्लैंड की ओर से रिकॉर्ड है और यह बेस्ट साझेदारियों में संयुक्त रूप से छठे स्थान पर है।

स्टीव स्मिथ को इंग्लैंड दौरे पर इंग्लिश फैन्स की खलेगी हूटिंग

स्मिथ इस बात से भी दुखी थे कि स्टेडियम में इंग्लिश फैन्स से भरे नहीं होंगे, जिन्होंने बीते समय में उनका हमेशा मजाक उड़ाया था और गेंद से छेड़छाड़ के कारण लगे निलंबन के बाद कुछ ज्यादा ही। स्मिथ ने सिडनी एयरपोर्ट पर कहा, मुझे वहां बल्लेबाजी करना पसंद है।

सिडनी | एजेंसी।

ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम इंग्लैंड के दौरे के लिए रविवार को रवाना हो गई, जो कोरोना वायरस के खतरे से बचने के लिए बायो सिक्योर एन्वॉयरमेंट में कड़े प्रोटोकॉल के अंतर्गत फैन्स के बिना खाली स्टेडियम में तीन वनडे और तीन टी20 इंटरनैशनल मैच खेलेगी। वैश्विक रूप से फैली इस महामारी के बाद ये देश से बाहर जाने वाली पहली ऑस्ट्रेलियाई नैशनल टीम है। 13 मार्च के बाद से ऑस्ट्रेलिया ने कोई मैच नहीं खेला है। उनकी न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज भी स्थगित हो गई थी। स्टीव स्मिथ रविवार को सिडनी से पर्थ के लिए रवाना हुए जहां से ऑस्ट्रेलियाई टीम स्पेशल फ्लाइट से लंदन के लिए रवाना होगी। स्मिथ ने कहा कि वो खेलने के लिए बेताब हैं, भले ही चारों ओर का माहौल कैसा भी हो। स्मिथ इस बात से भी दुखी थे कि स्टेडियम में इंग्लिश फैन्स से भरे नहीं होंगे, जिन्होंने बीते समय में उनका हमेशा मजाक उड़ाया था और गेंद से छेड़छाड़ के कारण लगे निलंबन के बाद कुछ ज्यादा ही। स्मिथ ने सिडनी एयरपोर्ट पर कहा, मुझे वहां बल्लेबाजी करना पसंद है।

उन्होंने कहा, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि वहां मेरा मजाक उड़ाने और मुझे और अधिक प्रेरित करने के लिए कोई दर्शक नहीं होगा। स्मिथ ने कहा, लेकिन फिर भी टीवी पर काफी फैन्स की निगाहें लगी होंगी और वहां खेल में वापसी करना शानदार होगा। पिछले साल तब स्मिथ दक्षिण अफ्रीका में गेंद से छेड़छाड़ के कारण लगे 12 महीने के निलंबन के बाद टेस्ट वापसी में वहां खेले थे तो इंग्लैंड के फैन्स ने उनकी खिल्ली उड़ाई थी। उन्होंने इस प्रतिक्रियाओं से प्रेरणा लेकिर उस साल एशेज सीरीज में 110 के औसत से 774 रन बनाए थे।

भारतीय टीम अब तक की सबसे बेस्ट टेस्ट टीम

नई दिल्ली | एजेंसी।

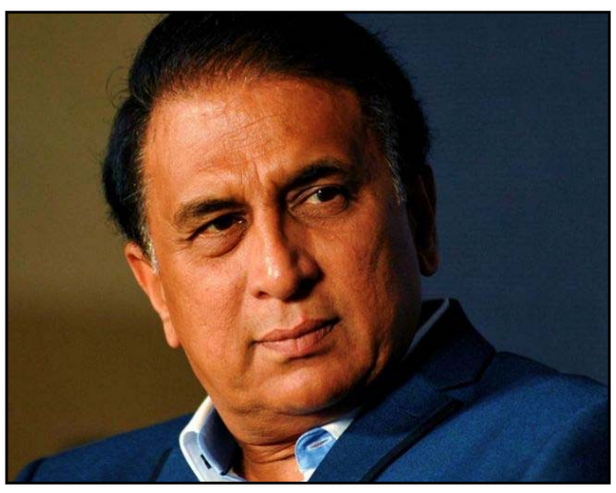

सुनील गावस्कर ने विराट की नेतृत्व वाली टीम को भारतीय क्रिकेट की अब तक की सबसे बेहतर टेस्ट टीम बताया। गावस्कर ने कहा कि विराट की टीम सबसे संतुलित है। इस टीम में बेहतरीन बल्लेबाजों के साथ अच्छे पेसर भी हैं। विराट खुद सबसे कामयाब कप्तानों में से एक हैं। उन्होंने ज्यादातर टेस्ट मैचों में भारत को जीत दिलवाई। वे टीम इंडिया को टेस्ट रैंकिंग में टॉप पर लेकर गए हैं। विराट ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज जीतने वाले पहले भारतीय कप्तान भी हैं। उन्होंने 2014 में कप्तानी शुरुआत की, जब उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में धोनी से बागडोर संभाली। 2017 में उन्हें लिमिटेड ओवर की जिम्मदारी भी सौंपी गई। गावस्कर ने कहा, भारत के पास बेहतर गेंदबाजी आक्रमण है। यह जरूरी भी है। यदि आप बीस विकेट नहीं लेते हैं, तो आप एक मैच नहीं जीतेंगे। 2018 में इंग्लैंड में हमने यही देखा। 2017 में साउथ अफ्रीका में भी यही देखा कि हमने हर बार 20 विकेट लिए। लेकिन ज्यादा रन नहीं बनाए। अब मुझे लगता है कि हमें ज्यादा अच्छी बल्लेबाजी करनी होगी। अब हम ऑस्ट्रेलियाई टीम से ज्यादा रन बना सकते हैं। बैटिंग के लिहाज से यह 1980 के दशक की टीम लगती है। लेकिन, इस टीम का बॉलिंग अटैक बेहतरीन है। गावस्कर ने आगे कहा, ÷हम अभी इतने सक्षम हैं कि हमारे गेंदबाज भारत के बनाए गए स्कोर से एक रन पहले ही ऑस्ट्रेलिया के 20 विकेट ले सकते हैं। मेरा मानना है कि यह टीम अब तक की सबसे बेहतर टेस्ट टीम है। तकनीक और क्षमता बेहतर है। इससे बेहतर टीम की कल्पना नहीं की जा सकती। बेहतर बल्लेबाजों के साथ अच्छे स्पिनर हैं। वर्ल्ड क्लास फास्ट बॉलर हैं। इनमें जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद शमी, उमेश यादव, भुवनेश्वर कुमार और इशांत शर्मा शामिल हैं। गावस्कर ने कहा- काश मैं लिमिटेड ओवर क्रिकेट में रोहित शर्मा की तरह बैटिंग कर पाता। हालात और आत्म विश्वास में कमी के कारण ऐसा नहीं हो सका। रोहित पेस और स्पिन के खिलाफ बड़े आराम से खेलते हैं। विराट कोहली के बाद वनडे में सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज हैं। 33 साल के रोहित शर्मा ने वनडे में ओपनर के तौर पर 27 शतक बनाए हैं। जबकि टी-20 इंटरनेशनल में उनके नाम 4 शतक हैं, जो इस इंटरनेशनल फॉर्मेट में सबसे ज्यादा है।

क्राउली ने जड़ा दोहरा शतक, बटलर का सैकड़ा

साउथम्पटन | एजेंसी।

जैक क्राउली के करियर के पहले दोहरे शतक की बदौलत इंगलैंड ने पाकिस्तान के खिलाफ तीसरे और अंतिम क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन शनिवार को चाय तक पहली पारी 5 विकेट पर 490 रन बनाकर अपनी स्थिति बेहद मजबूत कर ली। क्राउली ने कामचलाऊ स्पिनर अशद शाफिक की गेंद पर स्टंप आउट होने से पहले 393 गेंद की अपनी पारी में 34 चौकों और एक छक्के की मदद से 267 रन बनाए। अपने आठवें टेस्ट में खेल रहे क्राउली ने करियर में पहली बार 100 रन के आंकड़े को छुआ और इंगलैंड की ओर से सर्वाधिक व्यक्तिगत पारी के मामले में शीर्ष 10 में शामिल हो गए। उन्होंने ज्योफ्री बॉयकॉट, मौजूदा कप्तान जो रूट और बेन स्टोक्स जैसे दिग्गजों को पीछे छोड़ा। क्राउली ने जोस बटलर (नाबाद 140 रन) के साथ पांचवें विकेट के लिए 359 रन की साझेदारी की जो इंगलैंड की ओर से पांचवें विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी है। इन दोनों ने कीथ फ्लेचर और टोनी ग्रेग को पीछे छोड़ा जिन्होंने फरवरी 1973 में भारत के खिलाफ मुंबई के ब्रेबोर्न स्टेडियम में 254 रन की साझेदारी की थी। यह इंगलैंड की ओर से किसी भी विकेट की छठी सबसे बड़ी साझेदारी भी है।

क्राउली और बटलर कल लंच के बाद एक साथ बल्लेबाजी करने आए थे जब इंगलैंड की टीम 127 रन पर 4 विकेट गंवाने के बाद संकट में थी। क्राउली ने नसीम शाह की गेंद पर चौके के साथ 331 गेंद में दोहरा शतक पूरा किया। वह आज 171 रन से आगे खेलने उतरे। चाय के समय क्रिस वोक्स दो रन बनाकर बटलर का साथ दे रहे थे जिन्होंने वर्षा से प्रभावित पहले सत्र में अपने टेस्ट करियर का दूसरा शतक पूरा किया।

CC Hall of Fame 2020 का ऐलान

एजेंसी।

ICC Hall of Fame इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल यानी आइसीसी ने 2020 के आइसीसी हॉल ऑफ फेम का ऐलान कर दिया है। साउथ अफ्रीकाई दिग्गज जैक कैलिस समेत 3 दिग्गज खिलाड़ियों को ये खिताब मिला है। इन तीन दिग्गजों में एक महिला खिलाड़ी को भी आइसीसी ने हॉल ऑफ फेम 2020 में जगह दी है। आइसीसी ने कैलिस के अलावा पाकिस्तानी दिग्गज जहीर अब्बास और ऑस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेटर लीसा स्थैलेकर को हॉल ऑफ फेम में शामिल किया है।

आइसीसी ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर इस बात का ऐलान किया है कि ICC Hall of Fame 2020 के विजेता जैक कैलिस, जहीर अब्बास और लीसा हैं। ICC Hall of Fame 2020 के इंडक्टीज का ऐलान ऐलन विलकिंस, सुनील गावस्कर और मेल जोन्स ने किया है। आइसीसी हॉल ऑफ फेम अवॉर्ड की शुरुआत को अभी ज्यादा समय नहीं हुआ है,

रिया चक्रवर्ती ने मुर्दाघर में सुशांत की डेड बॉडी को देखकर कहा था-सॉरी बाबू, इस वजह से यूजर्स ने लगाई क्लास

सुशांत सिंह राजपूत की मौत को दो महीने से ज्यादा का वक्त बीत चुका है और आए दिन कई चौंकाने वाले खुलासे हो रहे हैं। हालांकि सीबीआई अब इस मामले की जांच कर रही है। पिछले कुछ दिनों से रिया चक्रवर्ती को लेकर कई बातें सामने आ रही हैं। ऐसे में यह सामने आया कि जब रिया चक्रवर्ती मुर्दाघर सुशांत की मौत के बाद उन्हें आखिरी बार देखने गयी तो उन्होंने सॉरी बाबू सुशांत को देखकर कहा था। इस बात के सामने आने के बाद सॉरी बाबू सोशल मीडिया पर ट्रेंड हो गया है। रिया के इस रिएक्शन पर कई यूजर्स ने कमेंट करते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी। इतना ही नहीं दर्शक तो यह भी अंदाजा लगाना शुरू हो गए हैं रिया ने ऐसा क्यों कहा। इससे पहले सुशांत के एक पड़ोसी ने बयान देते हुए कहा था कि सुशांत के घर की लाइट्स जल्दी 13 जून की रात को बंद हो गई थीं। पड़ोसी के इस बयान के सामने आने के बाद यूजर्स ने उन्हें भी निशाने लिया। इसपर एक यूजर ने कमेंट करते हुए कहा, बिना किसी के पूछे हमारा ध्यान भटकाने के लिए ये सब कहानियां बनाई जा रही हैं। सॉरी बाबू वाली कहानी भी स्क्रिप्टेड है। अन्य यूजर ने कहा, रिया ने सुशांत का फ्लैट बदलवाया, रिया ने कुक को और सुशांत के सभी करीबी सहयोगियों को बदल दिया। क्या सिर्फ सॉरी बाबू कहने के लिए उसकी छाती को छुने के लिए रिया मुर्दाघर गई थीं, दोनों ने मिलकर सुशांत को मारा है और अब यह सब ड्रामा किया जा रहा है। सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद 15 जून को फिल्म मेकर और एक्टर के दोस्त सुरजीत सिंह राठौर कूपर अस्पताल में गए थे और एक न्यूज एजेंसी से उस दिन के एक वाकया के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि, मैं करीब 11 बजे हॉस्पिटल पहुंचा था। करीब 11रू30 बजे मेरे दोस्त सूरज सिंह वहां आए और मुझसे कहने लगे कि सुशांत की गर्लफ्रेंड रिया चक्रवर्ती उनके अंतिम दर्शन करना चाहती हैं। पुलिसवालों से बात कर उसे सुशांत का चेहरा दिखा दो। मैंने पुलिस वालों से बात की और रिया को लेकर मुर्दाघर के अंदर पहुंच गया। जैसे ही मैंने सुशांत के चेहरे से चादर हटाई, रिया ने उनके सीने पर हाथ रखा और कहा- श्सॉरी बाबूश्। हम 5 से 7 मिनट तक अंदर रुके रहे। सुरजीत में आगे कहा कि सुशांत का शव रिया का भाई शौविक चक्रवर्ती और उनकी मां भी देखना चाहते थे। लेकिन उन्हें मुंबई पुलिस ने देखने नहीं दिया। सुरजीत ने दावा किया कि पुलिस अधिकारी से उन्होंने बात की और फिर सुशांत का शव देखने वह और रिया अंदर गए थे।

हिंदुस्तानी भाऊ को लगा फिर से धक्का, इंस्टाग्राम के बाद अब फेसबुक अकाउंट किया सस्पेंड

टीवी का सबसे चर्चित शो बिग बॉस 13 में नजर आये हिंदुस्तानी भाऊ यानी विकास पाठक इन दिनों खूब चर्चा में हैं। दरअसल हाल ही में हिंदुस्तानी भाऊ का इंस्टाग्राम अकाउंट सस्पेंड हो गया था अब इसके बाद उनके फेसबुक अकाउंट को भी निलंबित कर दिया है। दरअसल हिंदुस्तानी भाऊ ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा किया था, जिसके बाद कुछ सितारें जैसे कविता कौशिक, कुबरा सैत, कुनाल कामरा, फराह खान अली समेत कई और अन्य कलकारों ने उनके खिलाफरिपोर्ट दर्ज की थी,जिसके बाद उनका इंस्टाग्राम अकाउंट सस्पेंड कर दिया गया। इंस्टाग्राम के बाद अब हिन्दुस्तानी भाऊ के ऑफिशियल फेसबुक पेज को भी सोशल मीडिया से सस्पेंड कर दिया गया है। इसके पीछे की वजह बताई गयी है कि उन्होंने नफरत और सामुदायिक हिंसा फैलाई है। इसके बाद बहुत से यूजर्स ने सोशल मीडिया पर इसे रिपोर्ट किया है, जिसके बाद फेसबुक ने सस्पेंड करने का निर्णय लिया है और बाद में फेसबुक स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए बताया कि उन्होंने हिंदुस्तानी भाऊ का अकाउंट सस्पेंड कर दिया है। उन्होंने लिखा हमने हिंदुस्तानी भाऊ के अकाउंट को हटा दिया है क्योंकि वो हमारी कम्युनिटी गाइडलाइन्स के खिलाफहै। यह सब कुछ उस समय शुरू हुआ जब स्टैंड अप कॉमेडियन कुणाल कामरा ने सोशल मीडिया पर मुंबई पुलिस से विकास को उनके एक वीडियो की वजह से गिरफ्तार करने के लिए कहा। दरअसल विकास ने कुणाल का नाम लिए बिना एक ऐसा वीडियो शेयर किया,जिसमें उनके जैसे लोगों को सरेआम पीटने की बात बोली है। गाली गलौज से भरे इस वीडियो में विकास कहते नजर आ रहे हैं कि जो भी इंसान हिंदुओं की भावनाओं से ठेस पहुंचाने की कोशिश करेगा। उसे सरेआम पीटा जाएगा। कुणाल ने मुंबई पुलिस और महाराष्ट्र के गृह मंत्री अनिल देशमुख से इसी वीडियो पर कार्रवाई करने की गुजारिश की थी। वहीं बीते दिनों हिंदुस्तानी भाऊ एकता कपूर को लेकर दोयम दर्जे की भाषा का यूज करने की वजह से सुर्खियों में बने हुए थे। यूट्यूब पर अपने गाली-गलौज वाले वीडियोज से चर्चा में आए हिंदुस्थानी भाऊ के सोशल मीडिया अकाउंट्स पर यह एक्शन कमीडियन कुणाल कामरा की शिष्कायत के बाद लिया गया है। बता दें कि सोशल मीडिया पर एक तबका है जो विकास के इस तरह के वीडियो को खूब पसंद करता है। इसके थोड़े ही समय वो सोशल मीडिया पर खूब छाए भी रहे,लेकिन विकास को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि बिग बॉस के 13वें सीजन का प्रतिभागी बनकर ही हासिल हुई।

बिग बॉस 12 फेम जसलीन मथारू ने अभिनीत गुप्ता से तोड़ा रिश्ता

बिग बॉस 12 फेम और फेमस एक्ट्रेस जसलीन मथारू ने अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर एक खुलासा किया कि उन्हें उनका हमसफर मिल गया है। जसलीन ने बताया था कि वो भोपाल के डॉक्टर अभिनीत गुप्ता को डेट कर रही हैं, इतना ही उन्होंने कहा था कि दोनों जल्द शादी कर लेंगे। अभिनीत से उनकी बात जसलीन के गुरु अनूप जलोटा ने करवाई थी। एक्ट्रेस इस रिश्ते को लेकर काफी खुश थीं, लेकिन अब जसलीन ने एक दिल तोड़ने वाला खुलासा किया है। एक मीडिया रिपोर्टर को जसलीन ने बताया है कि उन्होंने और अभिनीत ने अगल होने का फैसला कर लिया है। जसलीन ने अभिनीत से ब्रेकअप कर लिया है। एक्ट्रेस ने कहा, 'हां हमारी शादी नहीं होगीज्हमारी कुंडनी मैच नहीं करतीं। मेरे माता-पिता कुंडली पर बहुत भरोसा करते हैं। मैं उनकी मर्जी के खिलाफ जाकर शादी नहीं करूंगी। मैं उन्हें किसी भी तरह की टेंशन नहीं देना चाहती। दूसरी बात मैंने खुद भी ये महसूस किया कि हम दोनों मैच नहीं करते। फिलहाल उनका तलाक का केस भी चल रहा है, जो बहुत लंबा जाने वाला है। इसलिए ये कहना गलत नहीं होगा कि हम एक दूसरे के लिए नहीं बने हैं'।

बता दें कि जसलीन हाल ही में बिग बॉस 13 फेम पारस छाबड़ा के स्वयंवर शो 'मुझसे शादी करोगे' में नज़र आई थीं। उस शो में जसलीन पारस से शादी करने के लिए गई थीं। हालांकि, ये शो भी बुरी तरह फ्लॉप रहा और न ही जसलीन का पारस से स्वयंवर हुआ। इससे पहले जसलीन बिग बॉस 12 में अनूप जलोटा की गर्लफ्रेंड के तौर पर भी नज़र आ चुकी हैं। बिग बॉस में जब जसलीन, अनूप जलोटा की गर्लफ्रेंड बनकर पहुंचीं तो काफी सुर्खियों रही थीं। इस वक्त दोनों को काफी ट्रोल किया गया था। लेकिन उससे भी ज्यादा चौंकाने वाली बात ये थी कि बाहर आकर दोनों ने इसे सिर्फ नाटक करार दिया।

कंगना रनौत पर भड़के सुशांत के वकील विकास सिंह,बोले- चला रही है खुद का एजेंडा

अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत के 14 जून को खुदकुशी कर लेने के बाद से उनके फैन्स से लेकर परिवार तक सभी लोग काफी ज्यादा दुखी हैं। फिलहाल इस केस की जांच सीबीआई को सौंपी गई है। जहां एक ओर पूरी बॉलीवुड इंडस्ट्री ने सुशांत के मामले में इतना हंगामा नहीं किया तो वहीं सुशांत मामले में अभिनेत्री कंगना रनौत आगे रहीं और अलग अलग लोगों पर निशाना साधती रहीं। ऐसे में सुशांत के वकील विकास सिंह ने कंगना रनौत पर ही आरोप लगाए हैं। दरअसल कंगना ने सबसे पहले ही सुशांत की डिप्रेशन वाली थ्योरी को गलत करार दिया था और एक्ट्रेस ने शुरू से ही इस केस में ठीक से जांच करने की बात कही है। मगर अब वकील विकास सिंह ने कंगना पर निशाना साधा है और उनका कहना है कि कंगना इस मामले से अपना एजेंडा चला रही हैं। हाल ही में एक चौनल से बात करते हुए सुशांत परिवार के वकील विकास सिंह ने कंगना रनौत के बयान को श्महत्वहीनश् बताया। उन्होंने कहा कंगना अपना एजेंडा चला रही हैं। अभिनेत्री उन लोगों पर हमला कर रही हैं, जिसके साथ उनकी व्यक्तिगत परेशानी रही है और ऐसे में वह अपना हिसाब चुकाना चाहती हैं। इतना ही नहीं उन्होने आगे यह भी कहा ऐसा लगता है कंगना अपनी ही धुन में हैं। वहीं सुशांत के परिवार द्वारा की गई एफआईआर में कंगना के किसी भी दावे से कोई लेना-देना नहीं है। हालांकि विकास सिंह ने इस दौरान कंगना के कुछेक दावों को ठीक भी बताया है,उनका कहना है कंगना द्वारा उठाए गए कुछ मुद्दे सही हैं,मगर यह भी है हर कोई जानता है कि फिल्म इंडस्ट्री में नेपोटिज्म होता है और कहीं न कहीं सुशांत ने भी भेदभाव झेला था। मगर इस केस की जांच केवल नेपोटिज्म के एंगल से हो ये सही नहीं होगा। क्योंकि जरूरी बात तो यह है कि किस तरह से रिया चक्रवर्ती और उनके गैंग ने सुशांत का शोषण कर उसे खत्म कर दिया।

गौरतलब है कि सुशांत सिंह राजपूत ने 14 जून को अपने घर में मृत पाए गए थे। पहले इस मामले को आत्महत्या का मामला करार दिया। मगर सुशांत के फैंस और उनके परिवार ने इस बात को कभी स्वीकार नहीं किया और अब सुशांत मामले की जांच सीबीआई के हाथों में सौंपी गई है।

अब सोनू सूद के नाम पर हुई धोखाधड़ी चालू भड़के एक्टर तो बोले-तुम जल्द गिरफ्तार होंगे

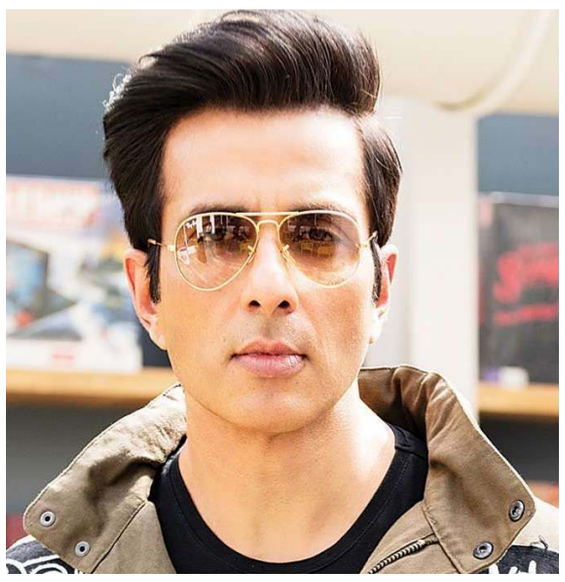

कोरोना महामारी में देशभर में लागू किये गये लॉकडाउन के बीच प्रवासी मजदूरों और जरूरतमंदों के लिए मसीहा बनकर सामने आये फिल्म अभिनेता सोनू सूद अभी भी लोगों की मदद करने में लगे हुए हैं। एक तरह तो सोनू ने लोगों को उनके गांव तक सही सलामत पहुंचा दिया है,मगर अभी उनके पास गुजारा करने के लिए कोई काम नहीं है,जिसके चलते अब एक्टर उन्हें मदद पहुंचाने की कोशिश में जुटे हुए हैं। इस बीच सोशल मीडिया पर सोनू सूद नाम से धोखाधड़ी का सिलसिला भी चल पड़ा है। जिसे देखकर सोनू सूद काफी ज्यादा गुस्सा भी हुए हैं। दरअसल सोनू सूद के नाम से ट्विटर पर फर्जी अकाउंट चालू है, जो जरूरतमंदों को अपने झांसे में लेने की कोशिश करता है। ऐसे में हाल ही में असम के रहने वाले एक शख्स ने सोनू सूद से मदद मांगी तब फर्जी अकाउंट वाले ने शख्स से उसका डिटेल भेजने के लिए कहा। इतना ही नहीं उसने सोनू सूद के नाम से दो जीमेल अकाउंट बनाए हुए हैं। सोनू सूद ने यह ट्वीट देखने के बाद उस शख्स को चेतावनी देते हुए कहा कि श्मासूम लोगों से धोखाधड़ी करने के आरोप में तुम बहुत जल्द गिरफ्तार होगे। इसलिए जल्दी से जल्दी यह धोखाधड़ी वाला बिजनेस बंद करो कहीं इससे पहले बहुत देर हो जाए। सोनू सूद ने एक ट्वीट में यह भी कहा दोस्तों, हम श्रमिकों के लिए जो भी सेवा कर रहे हैं वो बिल्कुल निःशुल्क है। अगर आपसे कोई भी व्यक्ति मेरे नाम पर पैसे मांग रहा है तो उसे तुरंत मना कर दीजिए। हमें या करीबी पुलिस थाने में इसकी रिपोर्ट कीजिए। बता दें कि यह कोई पहली दफा नहीं है जब सोनू सूद के नाम पर इस तरह की धोखाधड़ी की जा रही है क्योंकि इससे पहले भी ऐसे कई मामले सामने आए। जिसके बाद अभिनता खुद सामने आये और अपने फैन्स को ऐसे लोगों से सतर्क रहने की सलाह दी। ताकि वह इस तरह के धोखे का कभी शिकार न हो पाए।

नेहा मेहता के बाद अब तारक मेहता का..... को रोशन सिंह सोढ़ी ने भी कहा अलविदा, इस एक्टर ने किया रिप्लेस

सब टीवी के मशहूर शो तारक मेहता का उल्टा चश्मा में अंजली मेहता का रोल प्ले करने वाली अभिनेत्री नेहा मेहता ने शो को अलविदा 12 साल बाद कह दिया है। इसी बीच शो को लेकर खबर आ रही है की रोशन सिंह सोढ़ी का किरदार निभाने वाले एक्टर गुरचरण सिंह ने भी शो छोड़ने का फैसला कर लिया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, बलविंदर सिंह सूरी अब शो में सोढ़ी के किरदार में नजर आएंगे। दरअसल गुरचरण सिंह ने शो छोड़ने का फैसला इसलिए किया है क्योंकि हाल ही में उनके पिता की सर्जरी हुई है और इसके चलते उन्होंने शूटिंग शुरू नहीं की है। इसी को लेकर उन्हें जल्द शूटिंग करने के लिए मेकर्स बोल रहे हैं। बता दें कि अपने पिता के साथ कुछ समय गुरचरण बिताना चाहते हैं जिसके लिए शो से उन्होंने ब्रेक लेने का निर्णय किया है। खबरों के मुताबिक, तारक मेहता का उल्टा चश्मा की शूटिंग एक्टर बलविंदर सिंह ने शुरू कर दी है। वैसे तो गुरचरण सिंह का इंतजार मेकर्स ने बहुत समय तक किया लेकिन सेट पर वह अपने पिता की सर्जरी के बाद नहीं आ पाए। दरअसल शाहरुख खान के दोस्त का किरदार श्दिल तो पागल है फिम में बलविंदर सिंह ने निभाया था। वह फिल्म धमाल में भी नजर आ चुके हैं।

सलमान खान के घर गणपति बप्पा का हुआ स्वागत, परिवार के बाकी सदस्यों के साथ गणेश जी की आरती

शनिवार 22 अगस्त से गणेशोत्सव की शुरुआत हो चुकी है और यह त्योहार 10 दिनों तक मनाया जाता है। गणेश चतुर्थी की धूम बॉलीवुड में भी देखने को मिलती है। कई सेलेब्स अपने घर गणपति की मूर्ति की स्थापना हर साल करते हैं। हालांकि इस साल कोरोना के कारण समाजिक आयोजन की मनाही है लेकिन गणपति बप्पा का स्वागत कई फिल्मी सितारों ने किया है। गणपति की मूर्ति की स्थापना सलमान खान की छोटी बहन अर्पिता हर साल करती हैं और इस साल भी उन्होंने गणेश जी का स्वागत किया है। इस बार गणपति सेलिब्रेशन का आयोजन सोहेल खान के घर पर हुआ है। सोहेल के घर जाते हुए सलमान खान और यूलिया वंतूर मीडिया के कैमरे में कैद हुए। हालांकि सोशल मीडिया पर इस सेलिब्रेशन का एक वीडियो सलमान के जीजा अतुल अग्निहोत्री ने भी शेयर किया है। उस वीडियो में गणपति की आरती पूरा परिवार करते हुए दिखाई दे रहा है। गणपति की आरती सलमान खान के पिता सलीम खान, सलमा, हेलेन भी करते हुए नजर आए। इस आयोजन में अरबाज खान और उनकी गर्लफ्रेंड जॉर्जिया भी शामिल हुई। इसके अलावा सोहेन खान की पत्नी सीमा खान ने भी एक तस्वीर अपने घर की शेयर की है।

कंचन उजाला
हिंदी दैनिक

स्वामी नमोकंचन कार्पोरेट सर्विसेस (एल.एल.पी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कंचन सोलंकी द्वारा उमाकान्ती ऑफसेट प्रेस, ग्राम डेहवा पोस्ट मोहनलाल गंज लखनऊ से मुद्रित एवं 61/18 चुटकी भण्डार हुसैनगंज लखनऊ से प्रकाशित।

संपादक- कंचन सोलंकी

TITLE CODE- UPHIN48974

Mob: 8896925119, 9695670357
Email: kanchansolanki397@gmail.com

नोटः समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारो एवं लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नही। समस्त विवादो का निस्तारण लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।